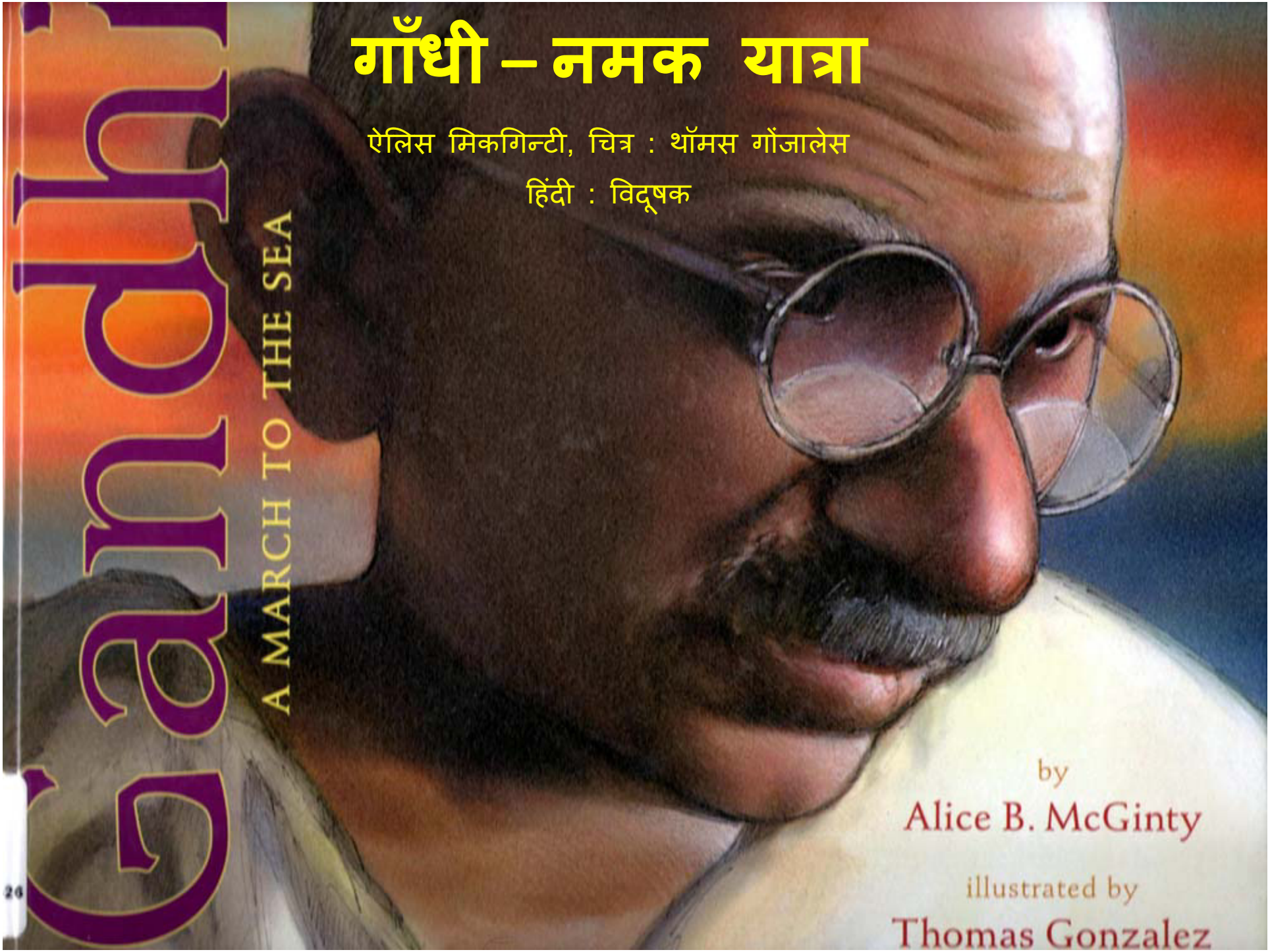

गाँधी – नमक यात्रा

ऐलिस मिकगिन्टी, चित्र : थॉमस गोंजालेस

हिंदी : विदूषक

गाँधी – नमक यात्रा

ऐलिस मिकगिन्टी, चित्र : थॉमस गोंजालेस

हिंदी : विदूषक

Gandhi

A MARCH TO THE SEA

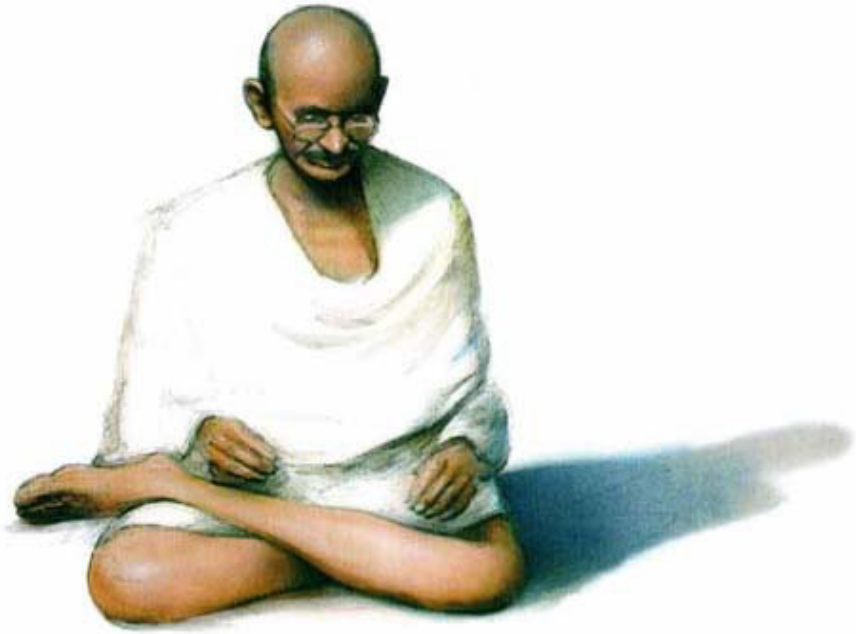

by Alice B. McGinty illustrated by Thomas Gonzalez

मोहनदास गाँधी ने कभी कहा था, "...सिर्फ अच्छा होना पर्याप्त नहीं है. हम में हौसले के साथ-साथ विवेक भी होना चाहिए."

बचपन में गाँधी कई चीज़ों से डरते थे. उन्हें अँधेरे से इतना डर लगता था कि वो लाइट जला कर सोते थे. वो लोगों से प्रेम करते थे, और दृढ-निश्चयी थे. उनमें सही-गलत में फर्क करने का विवेक भी था.

गाँधी को हिंसा द्वारा समस्याएं हल करना गलत लगता था. भारत पर अंग्रेज़ राज्य करें, यह बात भी गाँधी को गलत लगती थी. अंग्रेजों ने कई गलत कानून लागू किये थे – जिनमें एक के तहत भारतियों को समुद्र से नमक निकालने पर पाबंदी थी. इसलिए भारत के लोग, अंग्रेजों से नमक खरीदने के लिए मजबूर थे और उसके लिए उन्हें बहुत टैक्स भी देना पड़ता था. इस वजह से बहुत से भारतीय अपने भोजन में नमक नहीं डाल पाते थे और फीका खाना खाते थे. कपड़ों और नमक पर लगे टैक्स की वजह से एक ओर अंग्रेज़ मालामाल हो रहे थे और दूसरी तरफ हिंदुस्तान के लोग गरीब हो रहे थे.

गाँधी, हिंदुस्तान को अंग्रेजों के शासन से मुक्त करवाना चाहते थे. इसके लिए उन्होंने तमाम अहिंसक आन्दोलन छेड़े और ब्रिटिश कानूनों को चुनौती दी. गाँधी ने अपने आन्दोलन को "सत्याग्रह" (आत्मा का बल) नाम दिया.

गाँधी के शांतिपूर्ण आन्दोलनों में, नमक के लिए की गई "दांडी यात्रा" काफी अनूठी और प्रसिद्ध है.

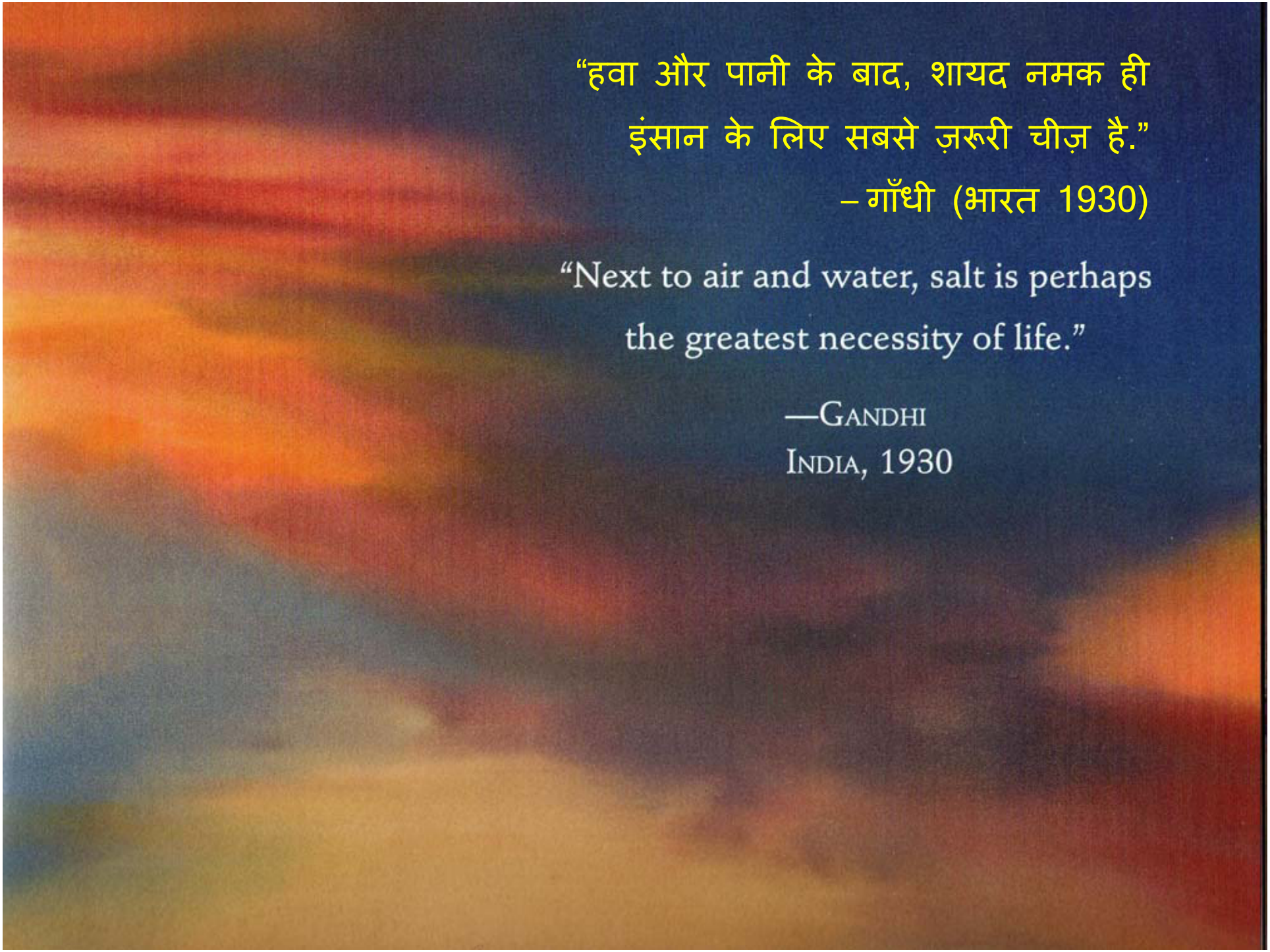
“हवा और पानी के बाद, शायद नमक ही
इंसान के लिए सबसे ज़रूरी चीज़ है.”
– गाँधी (भारत 1930)
“Next to air and water, salt is perhaps
the greatest necessity of life.”
—Gandhi
India, 1930

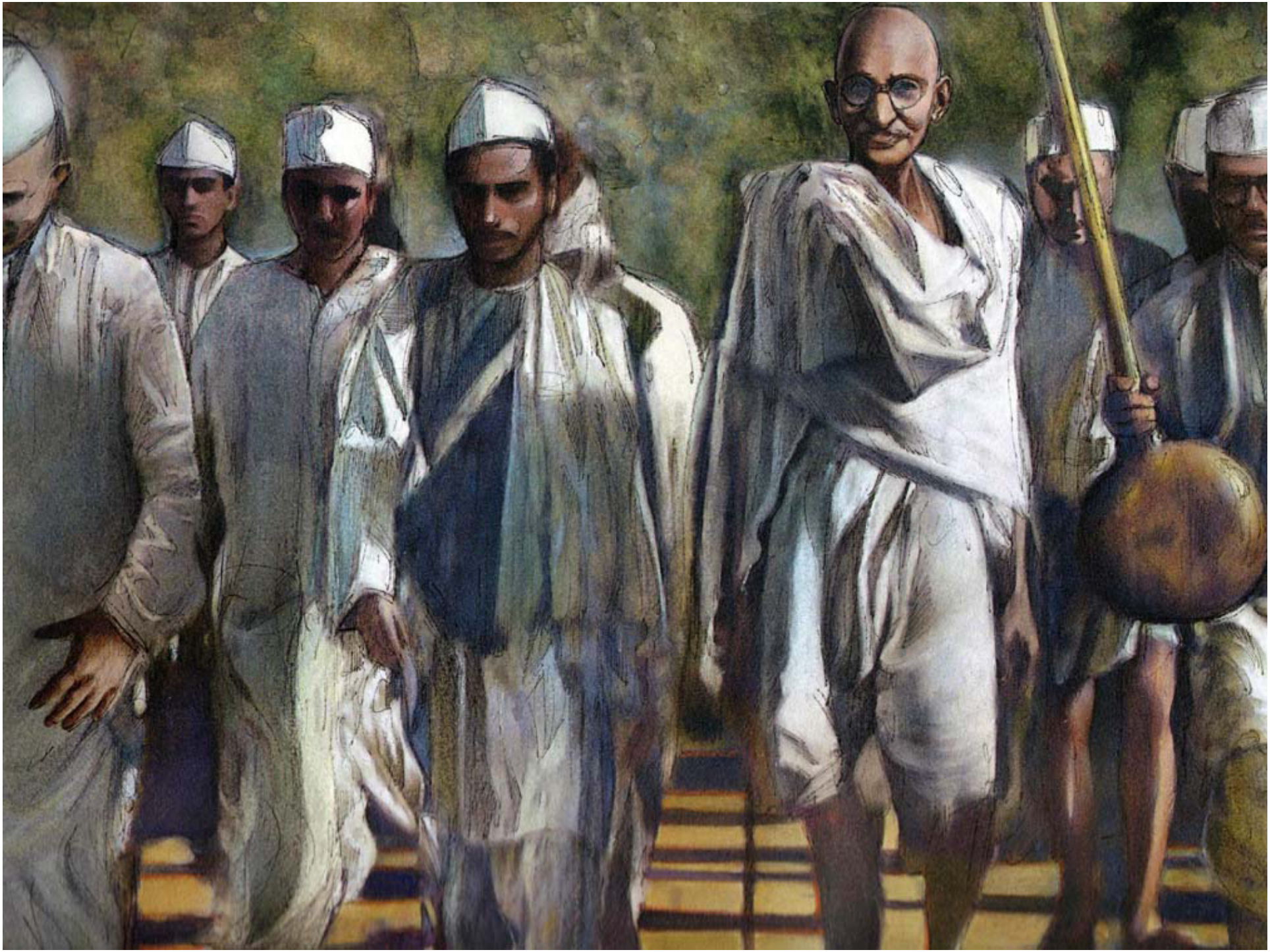

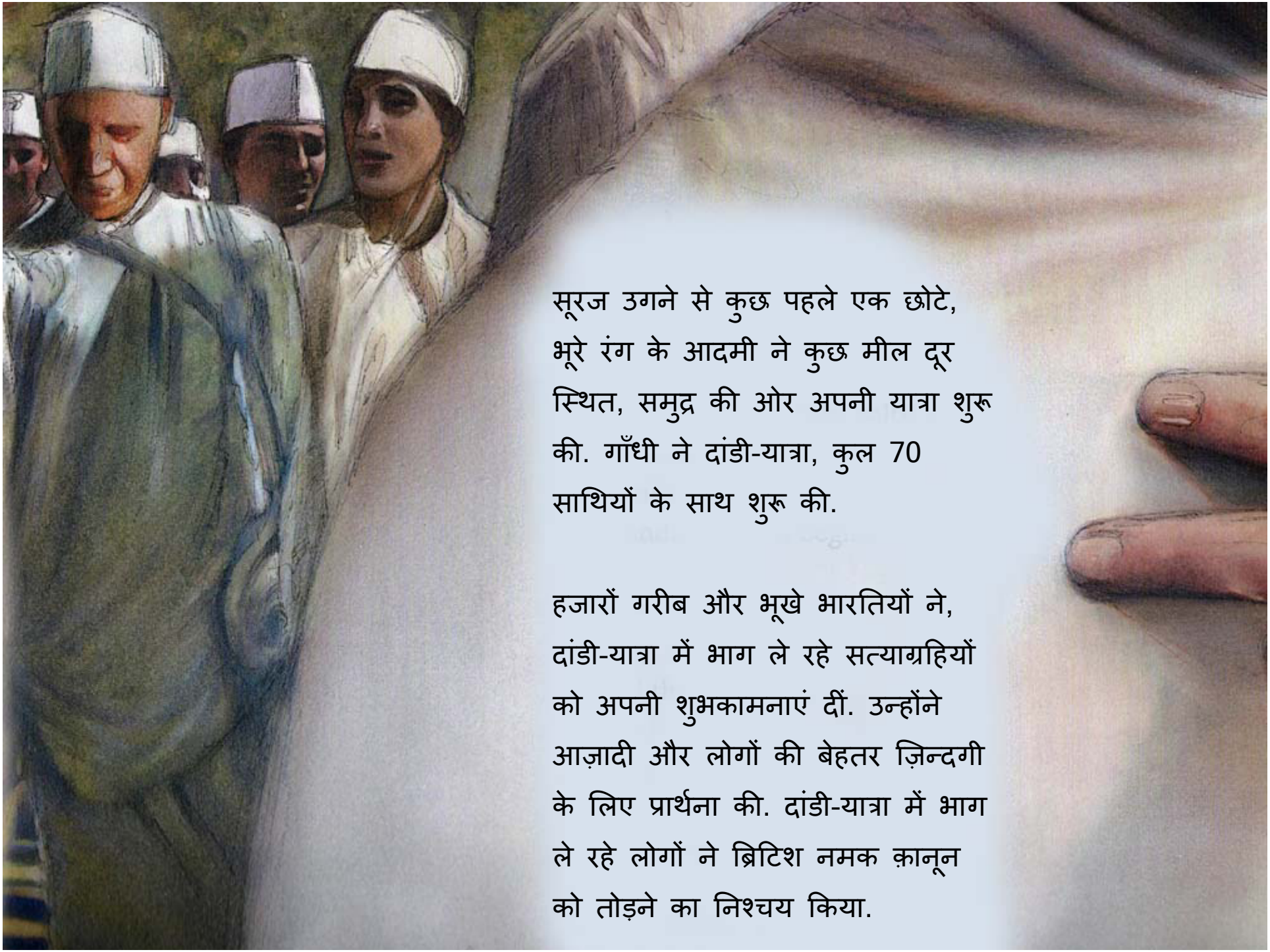

सूरज उगने से कुछ पहले एक छोटे, भूरे रंग के आदमी ने कुछ मील दूर स्थित, समुद्र की ओर अपनी यात्रा शुरू की. गाँधी ने दांडी-यात्रा, कुल 70 साथियों के साथ शुरू की.

हजारों गरीब और भूखे भारतियों ने, दांडी-यात्रा में भाग ले रहे सत्याग्रहियों को अपनी शुभकामनाएं दीं. उन्होंने आज़ादी और लोगों की बेहतर ज़िन्दगी के लिए प्रार्थना की. दांडी-यात्रा में भाग ले रहे लोगों ने ब्रिटिश नमक क़ानून को तोड़ने का निश्चय किया.

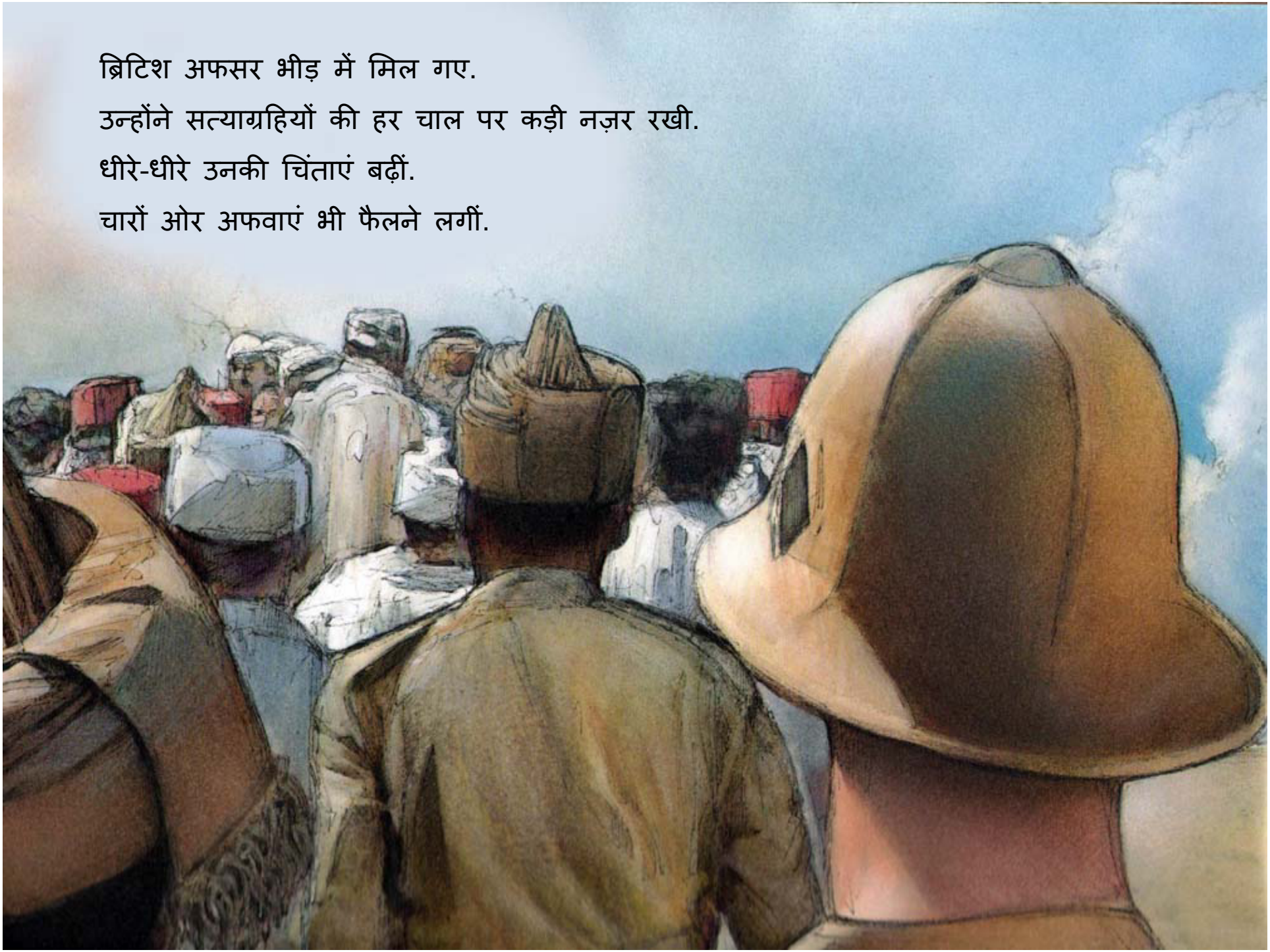

ब्रिटिश अफसर भीड़ में मिल गए.
उन्होंने सत्याग्रहियों की हर चाल पर कड़ी नज़र रखी.
धीरे-धीरे उनकी चिंताएं बढ़ीं.
चारों ओर अफवाएं भी फैलने लगीं.

क्या गाँधी की गिरफ्तारी होगी?
क्या सत्याग्रहियों को जेल में डाला जायेगा?
क्या सत्याग्रहियों को रोकने के लिए
सड़क पर मशीन-गनें तैनात की जाएँगी?

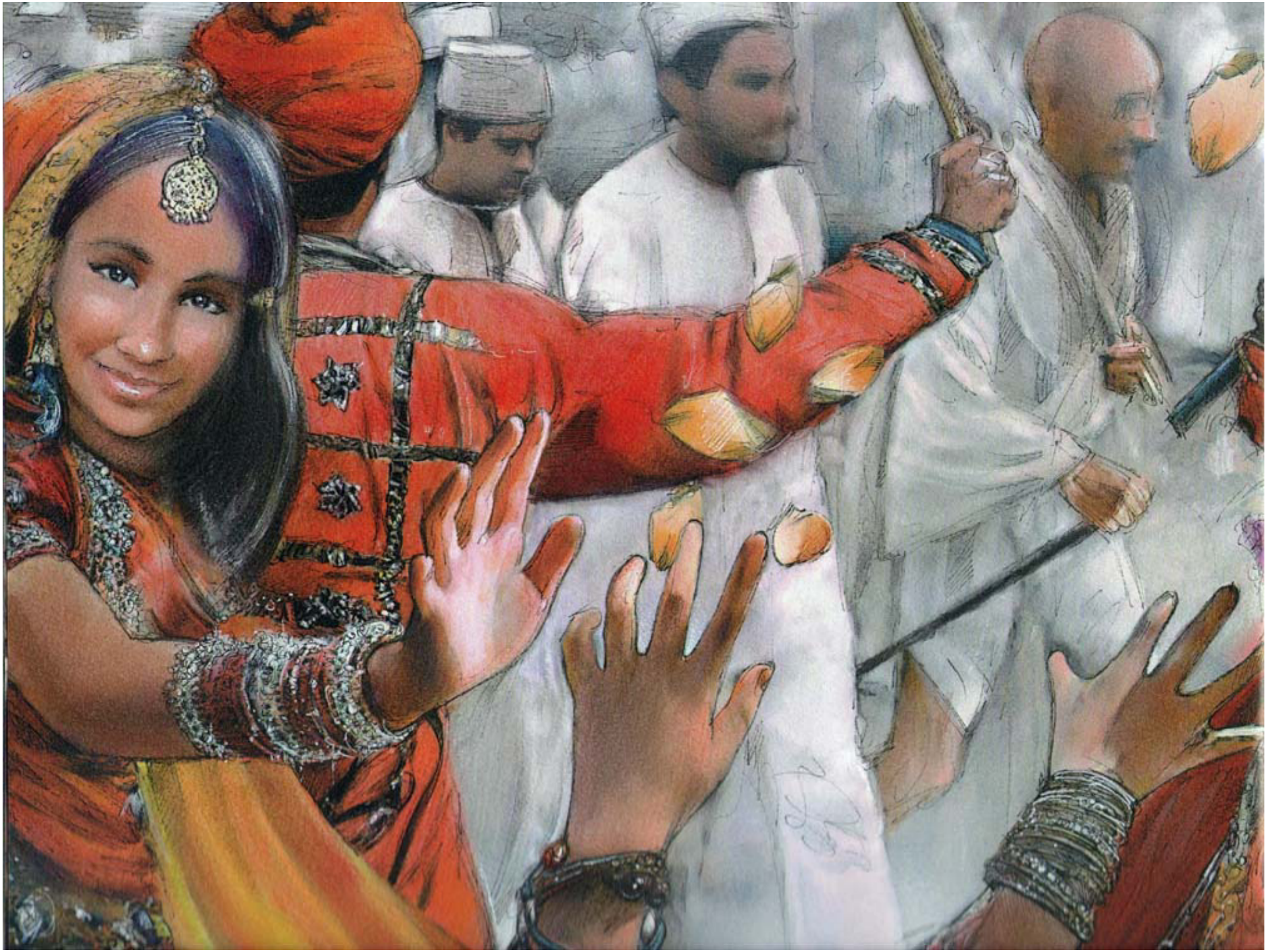

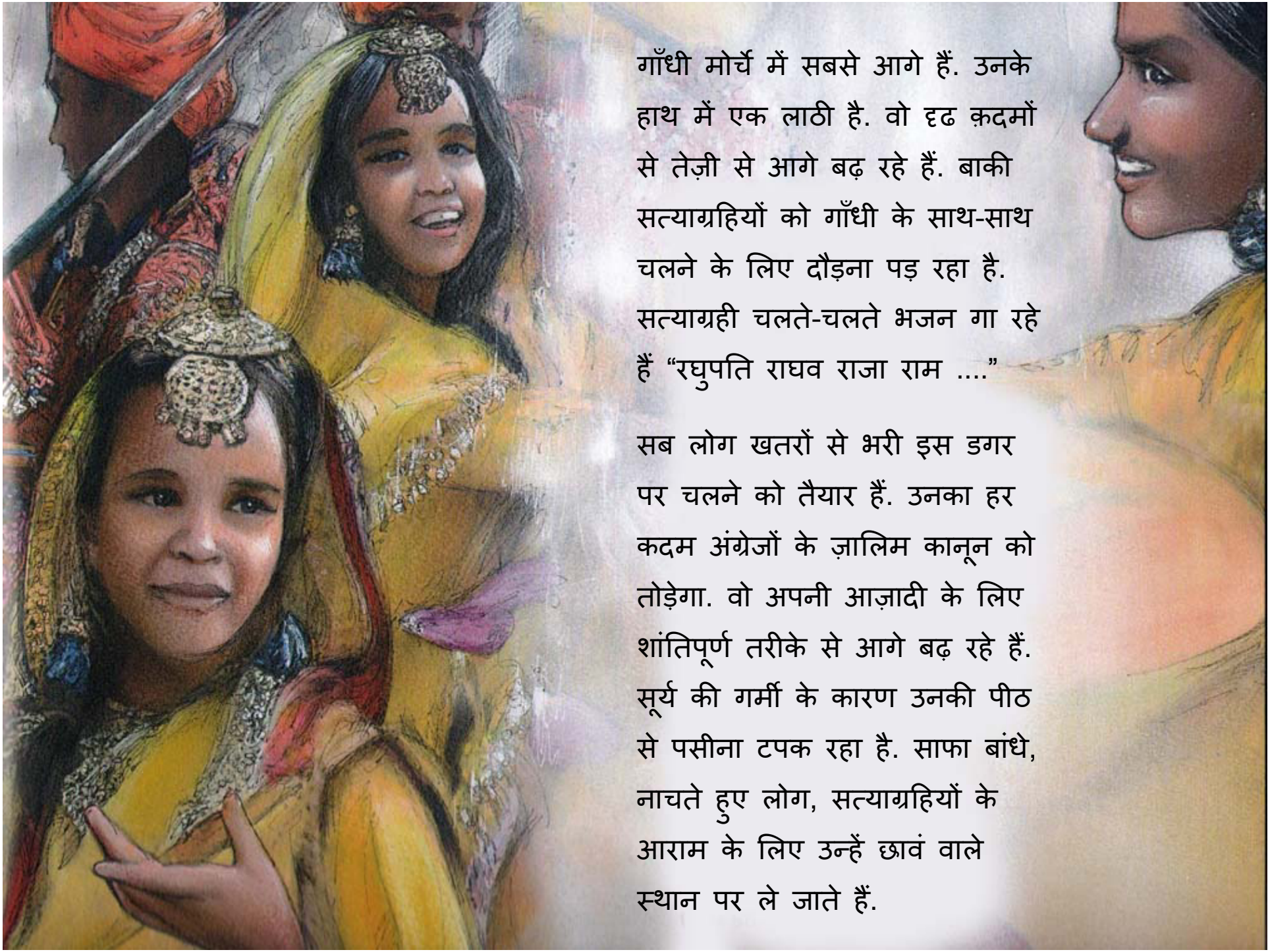

गाँधी मोर्चे में सबसे आगे हैं. उनके हाथ में एक लाठी है. वो दृढ क़दमों से तेज़ी से आगे बढ़ रहे हैं. बाकी सत्याग्रहियों को गाँधी के साथ-साथ चलने के लिए दौड़ना पड़ रहा है. सत्याग्रही चलते-चलते भजन गा रहे हैं “रघुपति राघव राजा राम ....”

सब लोग खतरों से भरी इस डगर पर चलने को तैयार हैं. उनका हर कदम अंग्रेजों के ज़ालिम कानून को तोड़ेगा. वो अपनी आज़ादी के लिए शांतिपूर्ण तरीके से आगे बढ़ रहे हैं. सूर्य की गर्मी के कारण उनकी पीठ से पसीना टपक रहा है. साफा बांधे, नाचते हुए लोग, सत्याग्रहियों के आराम के लिए उन्हें छावं वाले स्थान पर ले जाते हैं.

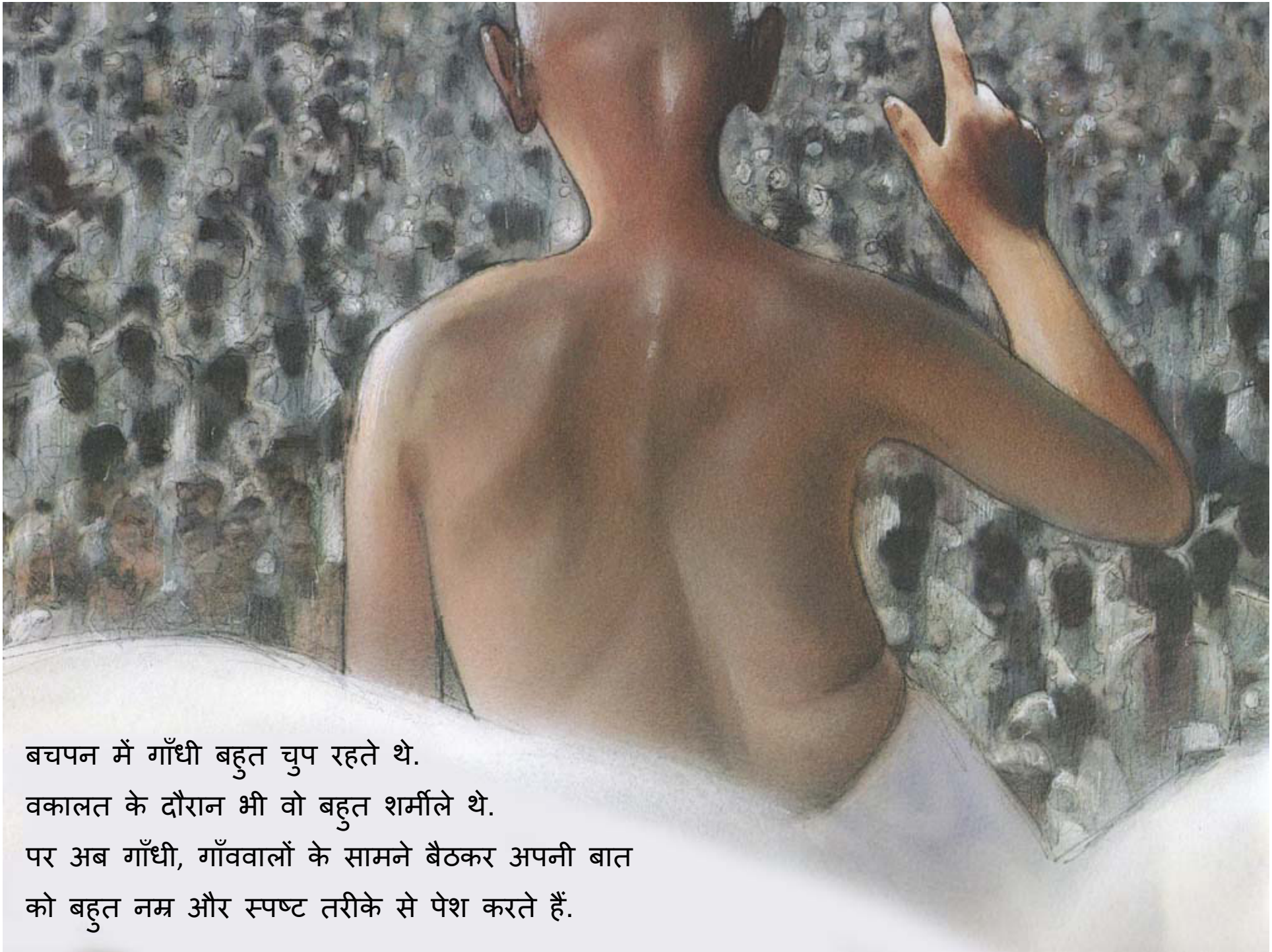

बचपन में गाँधी बहुत चुप रहते थे.
वकालत के दौरान भी वो बहुत शर्मीले थे.
पर अब गाँधी, गाँववालों के सामने बैठकर अपनी बात
को बहुत नम्र और स्पष्ट तरीके से पेश करते हैं.

एक ऐसा क़ानून जो भारतवासियों
द्वारा समुद्र से नमक निकालने पर
पाबंदी लगाता है. ऐसा कानून सरासर
गलत है! नमक पर लगा ऊंचा टैक्स
भी गलत है. और ब्रिटेन में बने कपड़े
की कीमत भी हिन्दुस्तानियों के लिए
बहुत ज्यादा है.

गाँधी ने लोगों को अपना कपड़ा खुद
कातना और बुनना सिखाया.
फिर गाँधी ने प्रण लिया, "... अब हम
खाने का नमक खुद बनायेंगे, और उसे
लोगों को बेचेंगे." उसके लिए लोगों को
जेलों में डाला जा सकता है.

लोग अब अनुचित टैक्स नहीं देंगे.
वे अब गलत ब्रिटिश कानूनों का पालन
नहीं करेंगे.

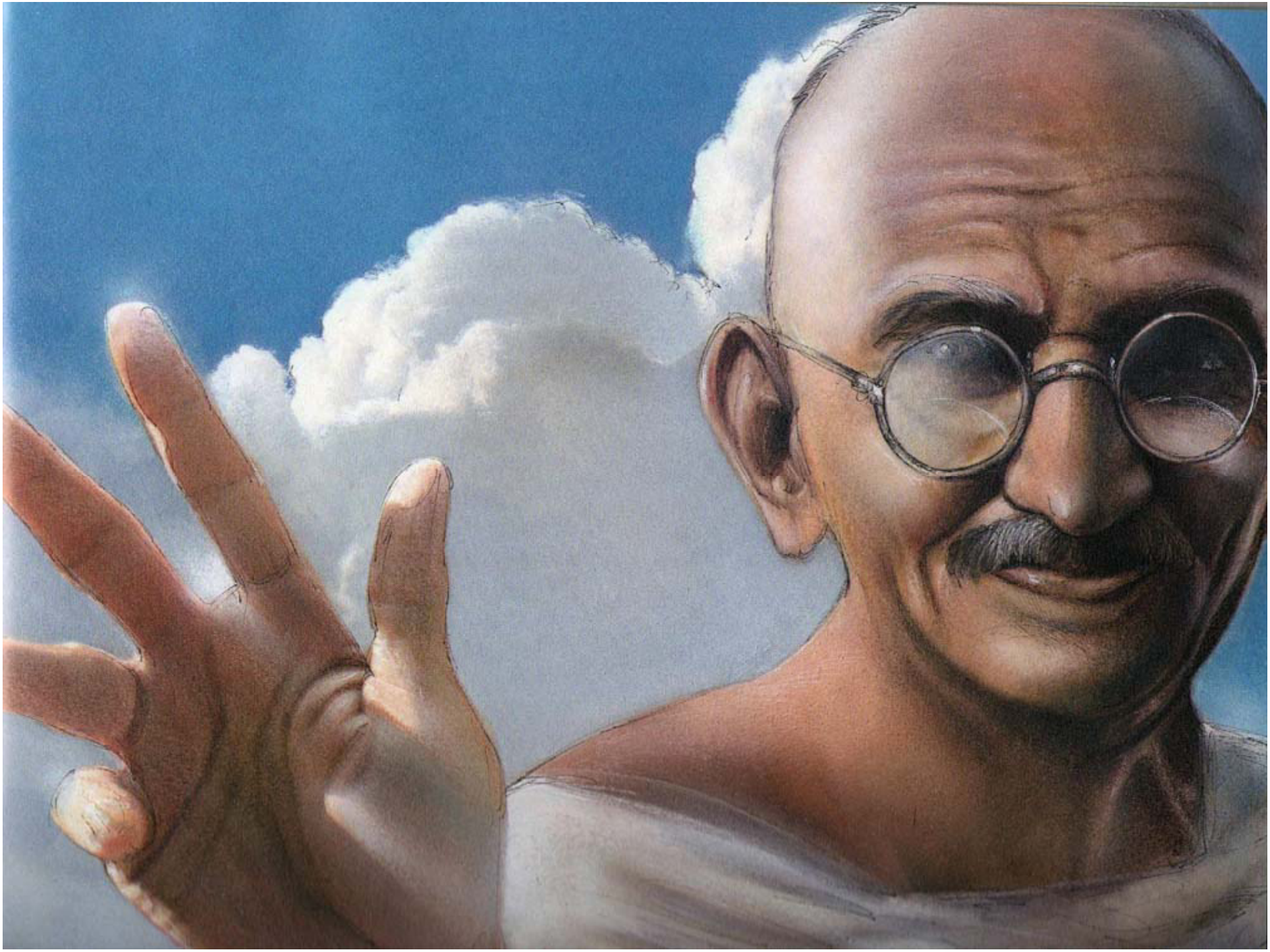

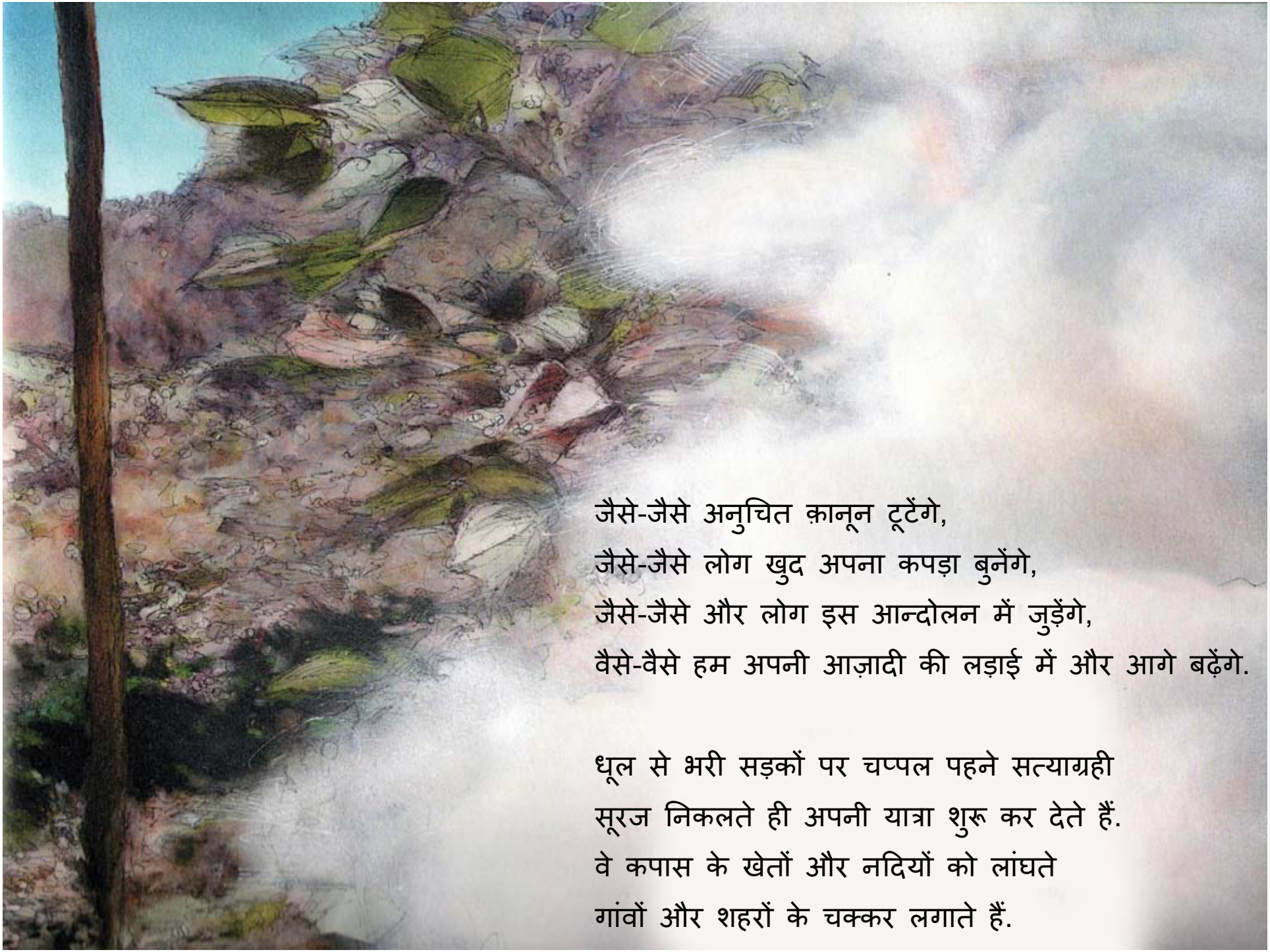

जैसे-जैसे अनुचित क़ानून टूटेंगे,
जैसे-जैसे लोग खुद अपना कपड़ा बुनेंगे,
जैसे-जैसे और लोग इस आन्दोलन में जुड़ेंगे,
वैसे-वैसे हम अपनी आज़ादी की लड़ाई में और आगे बढ़ेंगे.

धूल से भरी सड़कों पर चप्पल पहने सत्याग्रही
सूरज निकलते ही अपनी यात्रा शुरू कर देते हैं.
वे कपास के खेतों और नदियों को लांघते
गांवों और शहरों के चक्कर लगाते हैं.

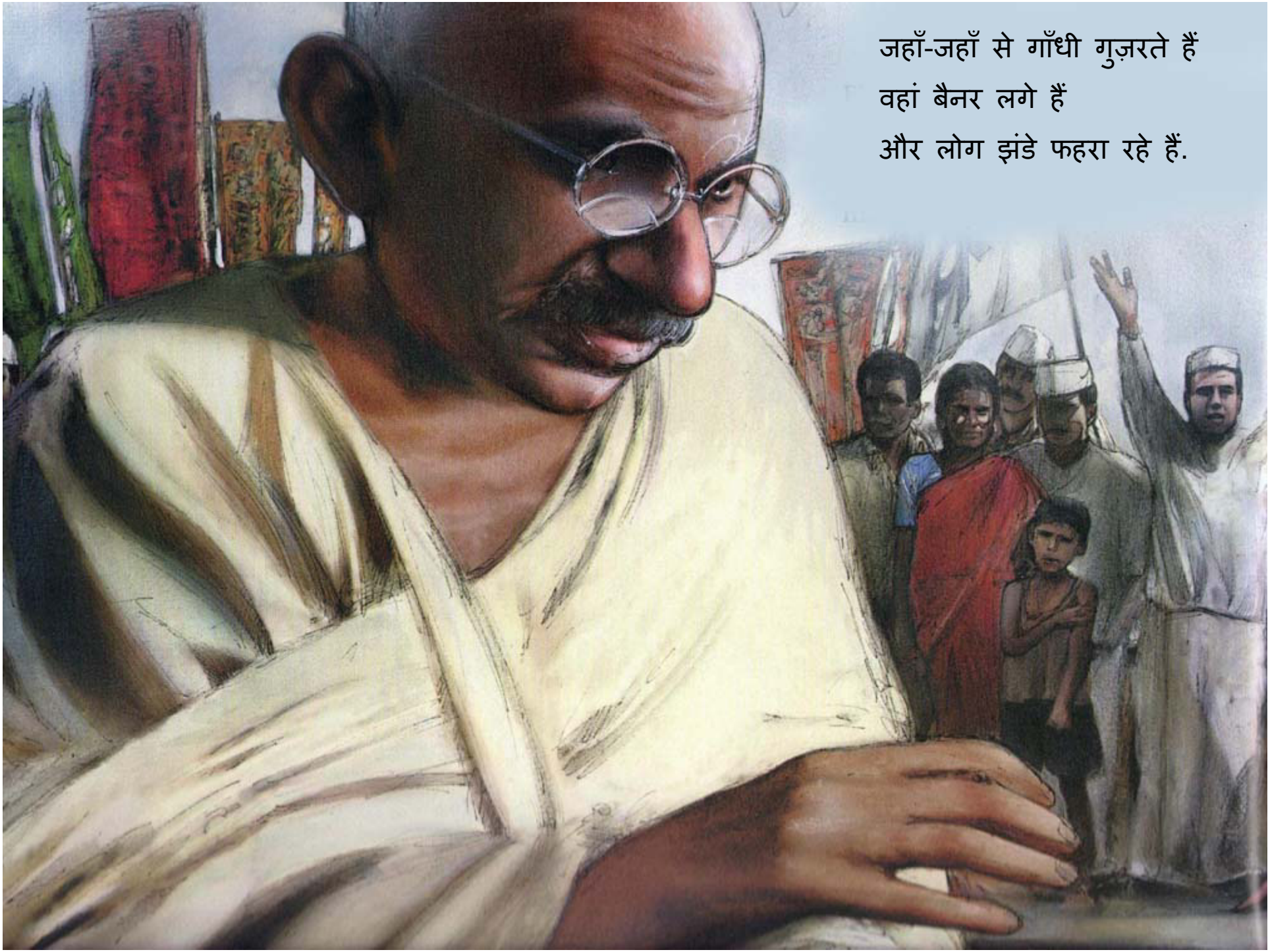
जहाँ-जहाँ से गाँधी गुज़रते हैं
वहां बैनर लगे हैं
और लोग झंडे फहरा रहे हैं.

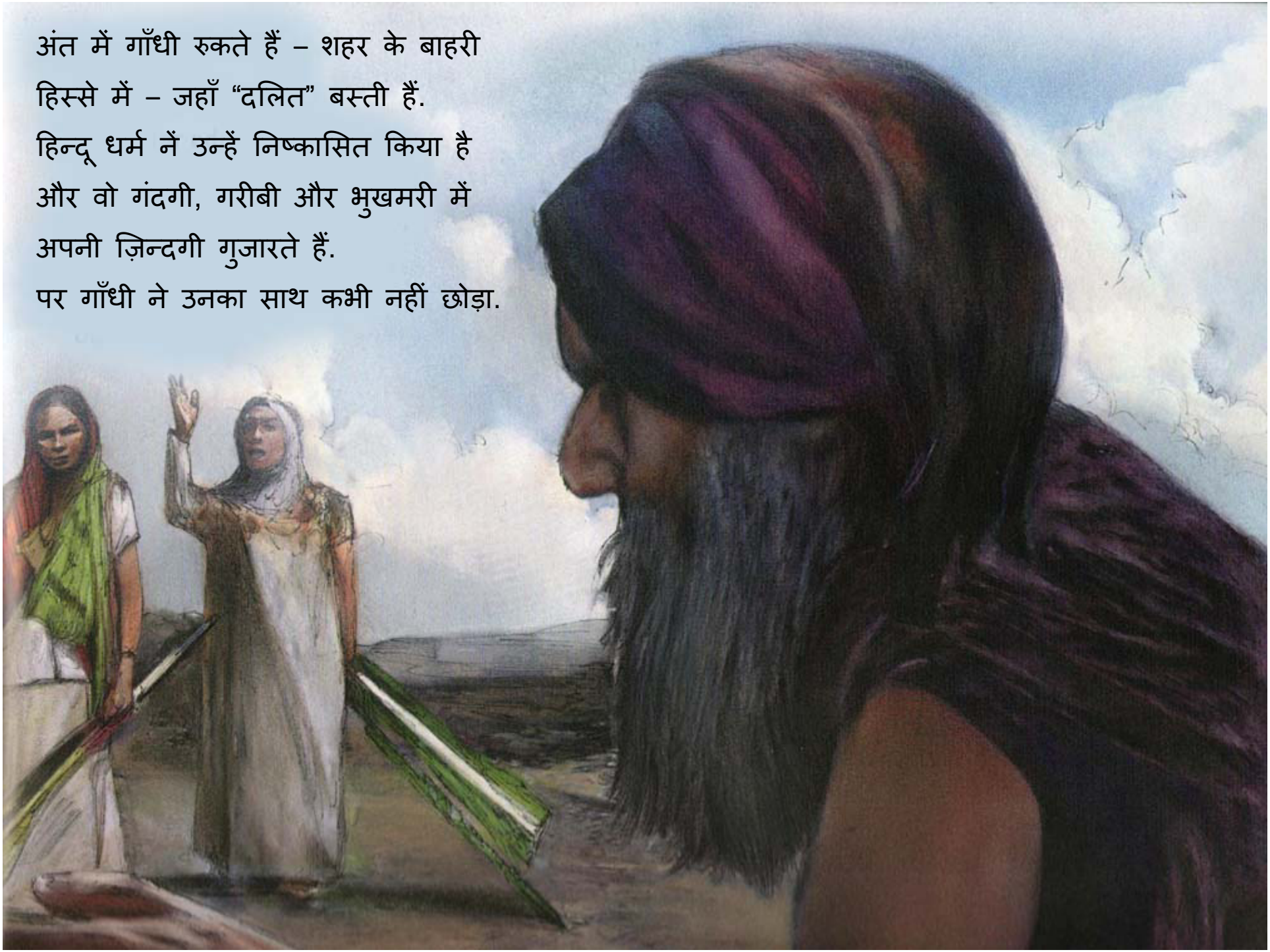
अंत में गाँधी रुकते हैं – शहर के बाहरी
हिस्से में – जहाँ “दलित” बस्ती हैं.
हिन्दू धर्म नें उन्हें निष्कासित किया है
और वो गंदगी, गरीबी और भुखमरी में
अपनी ज़िन्दगी गुजारते हैं.
पर गाँधी ने उनका साथ कभी नहीं छोड़ा.

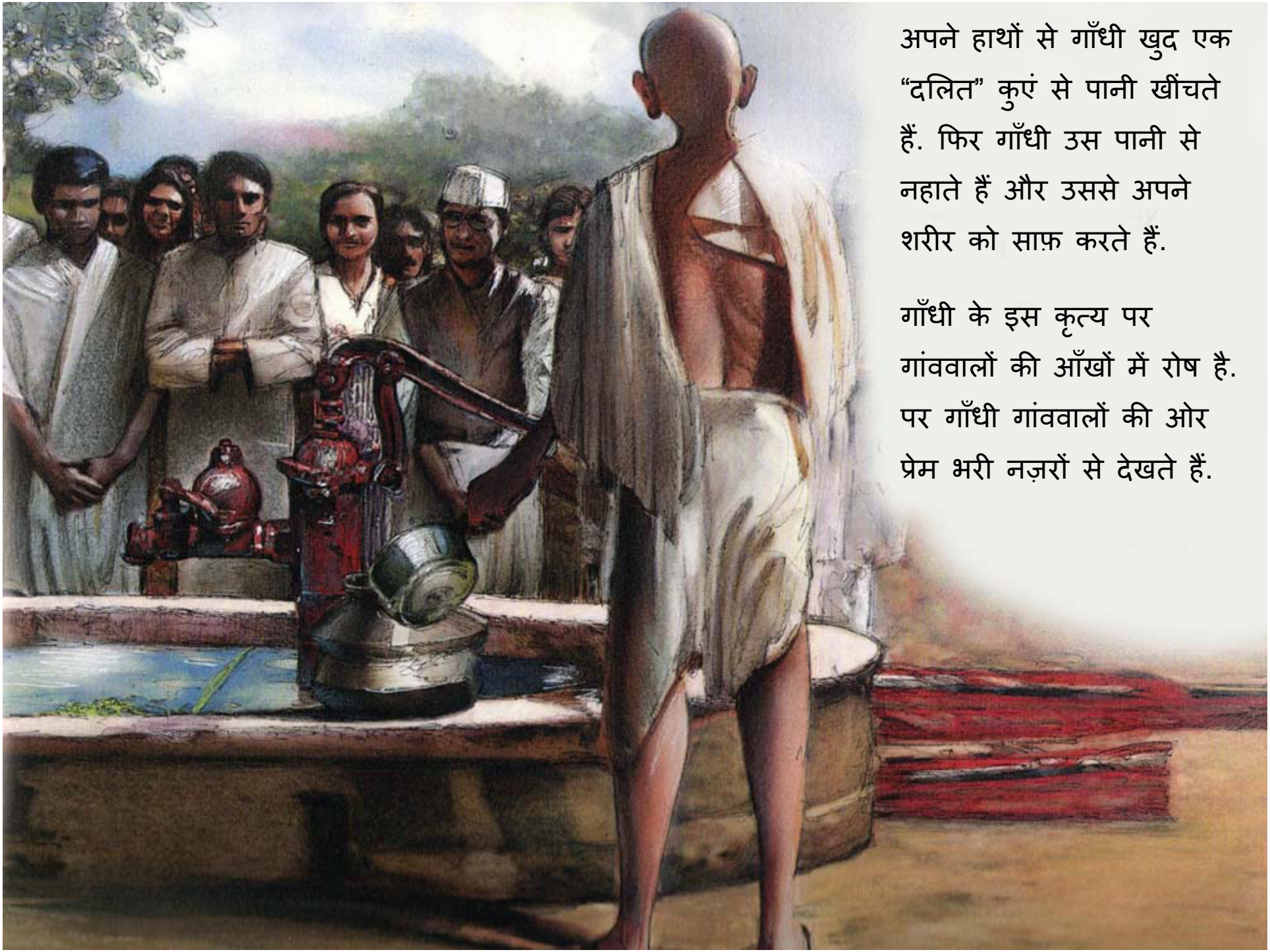

अपने हाथों से गाँधी खुद एक “दलित” कुएं से पानी खींचते हैं. फिर गाँधी उस पानी से नहाते हैं और उससे अपने शरीर को साफ़ करते हैं.

गाँधी के इस कृत्य पर गांववालों की आँखों में रोष है. पर गाँधी गांववालों की ओर प्रेम भरी नज़रों से देखते हैं.

क्या हम अपने ही देशवासियों को नीचा देखें?

क्या हम वही हरकत करें, जो अंग्रेजों ने हमारे साथ की थी?

गाँधी मुसलामानों, हिंदुओं और शूद्रों से कहते हैं - कि अलग-अलग होने के बावजूद वे सभी एक-समान हैं. भारत को आज़ादी की लड़ाई के लिए उन सभी लोगों की ज़रुरत है.

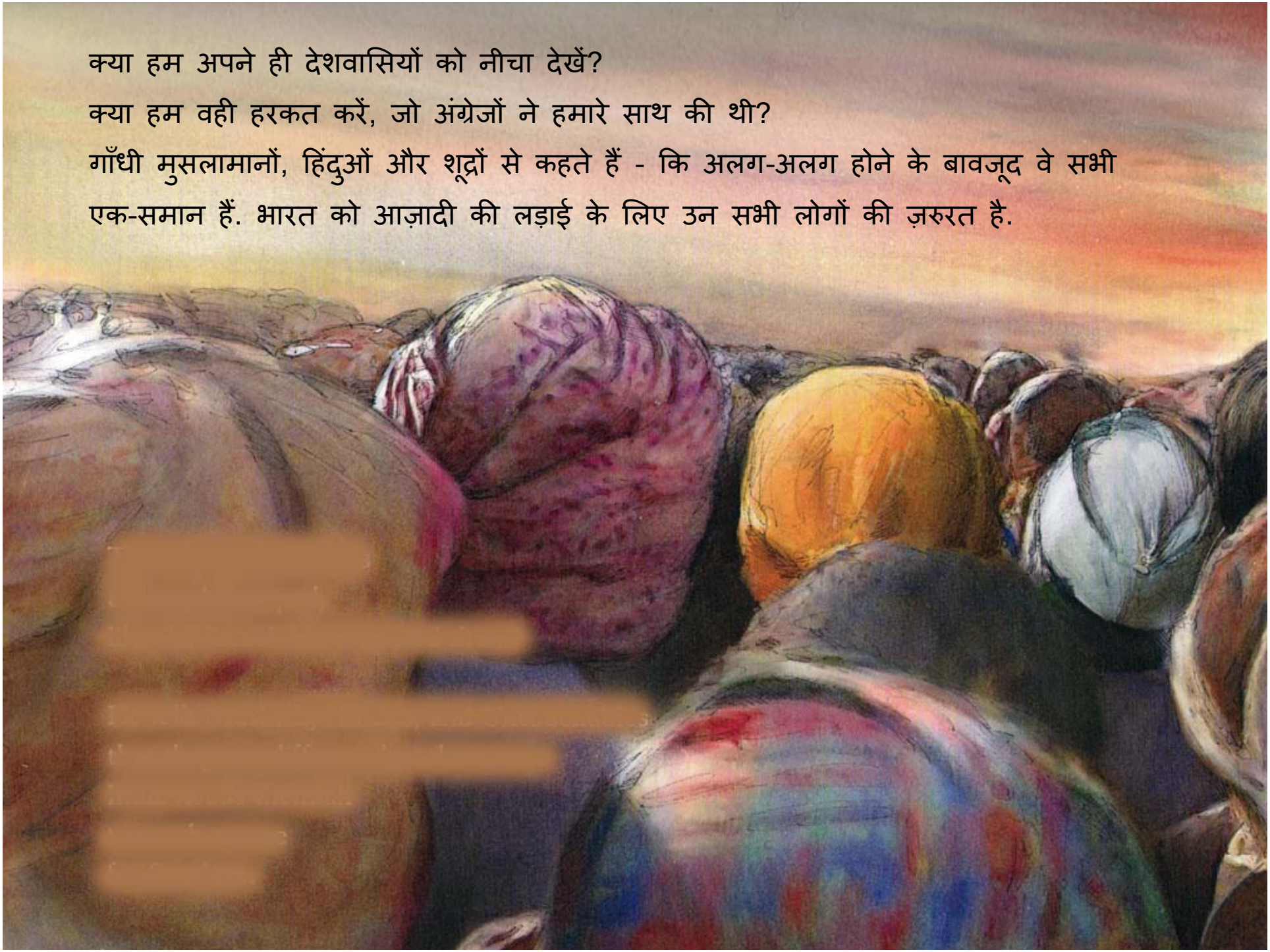

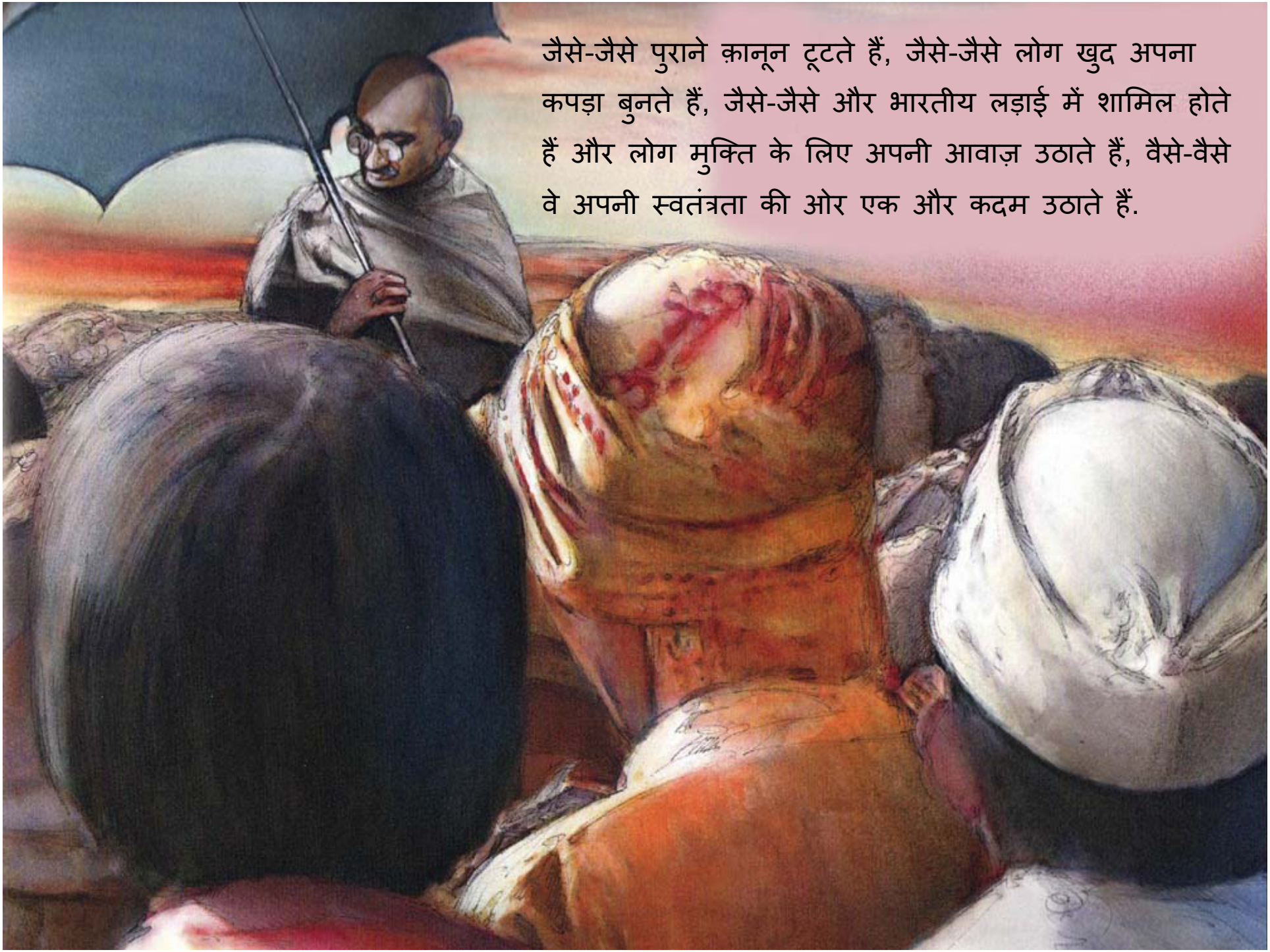
जैसे-जैसे पुराने क़ानून टूटते हैं, जैसे-जैसे लोग खुद अपना कपड़ा बुनते हैं, जैसे-जैसे और भारतीय लड़ाई में शामिल होते हैं और लोग मुक्ति के लिए अपनी आवाज़ उठाते हैं, वैसे-वैसे वे अपनी स्वतंत्रता की ओर एक और कदम उठाते हैं.

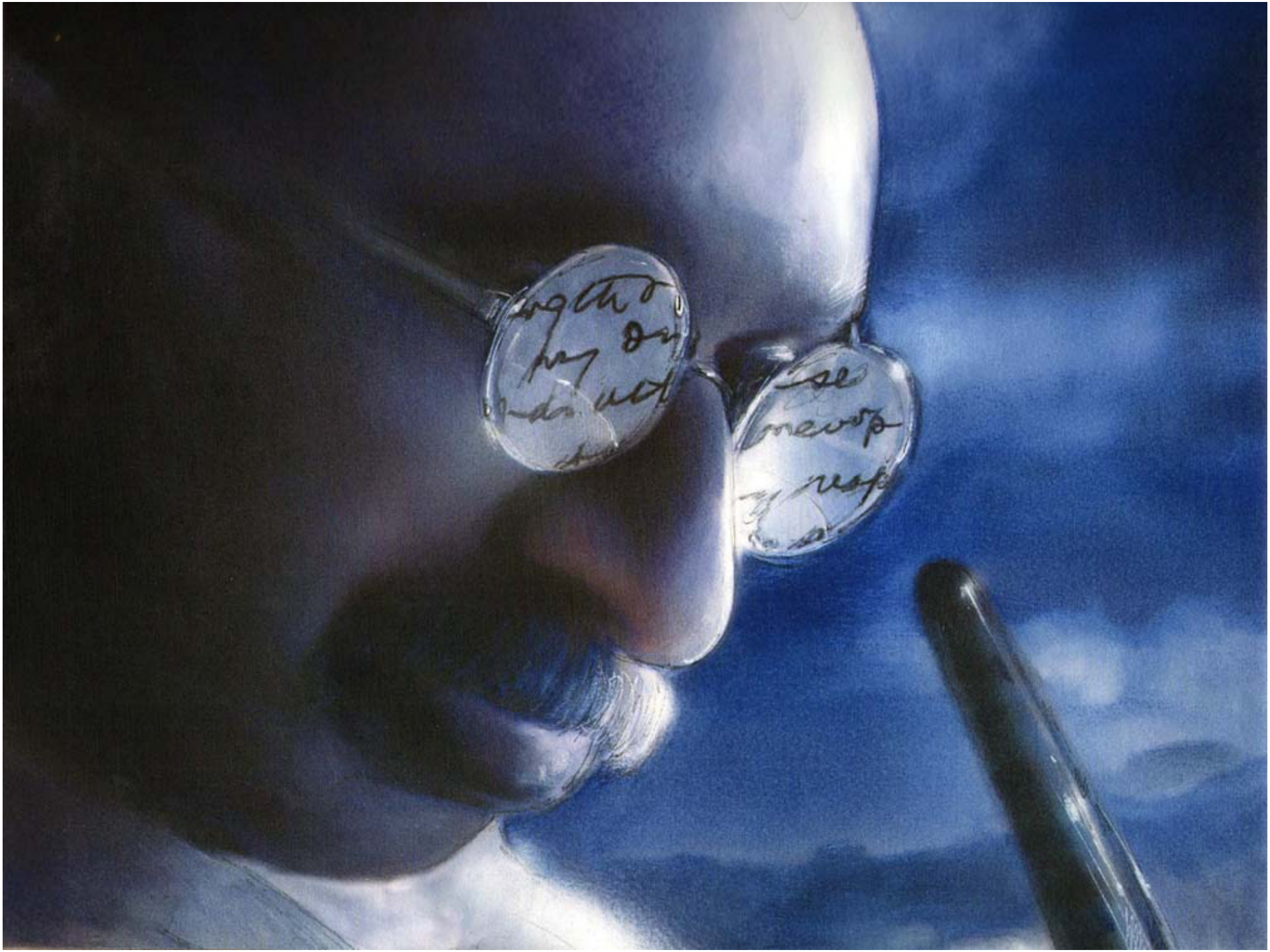

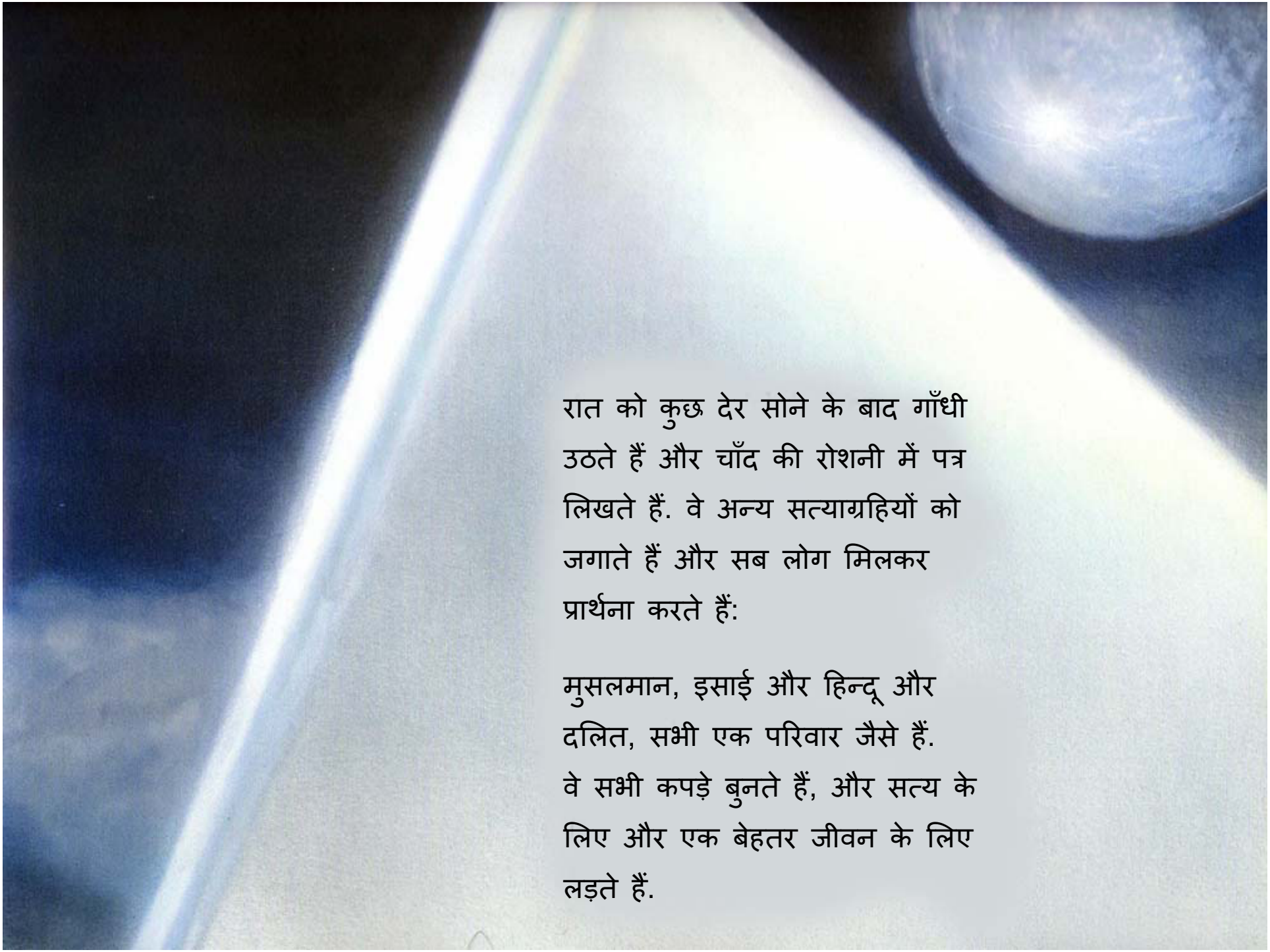

रात को कुछ देर सोने के बाद गाँधी
उठते हैं और चाँद की रोशनी में पत्र
लिखते हैं. वे अन्य सत्याग्रहियों को
जगाते हैं और सब लोग मिलकर
प्रार्थना करते हैं:

मुसलमान, इसाई और हिन्दू और
दलित, सभी एक परिवार जैसे हैं.
वे सभी कपड़े बुनते हैं, और सत्य के
लिए और एक बेहतर जीवन के लिए
लड़ते हैं.

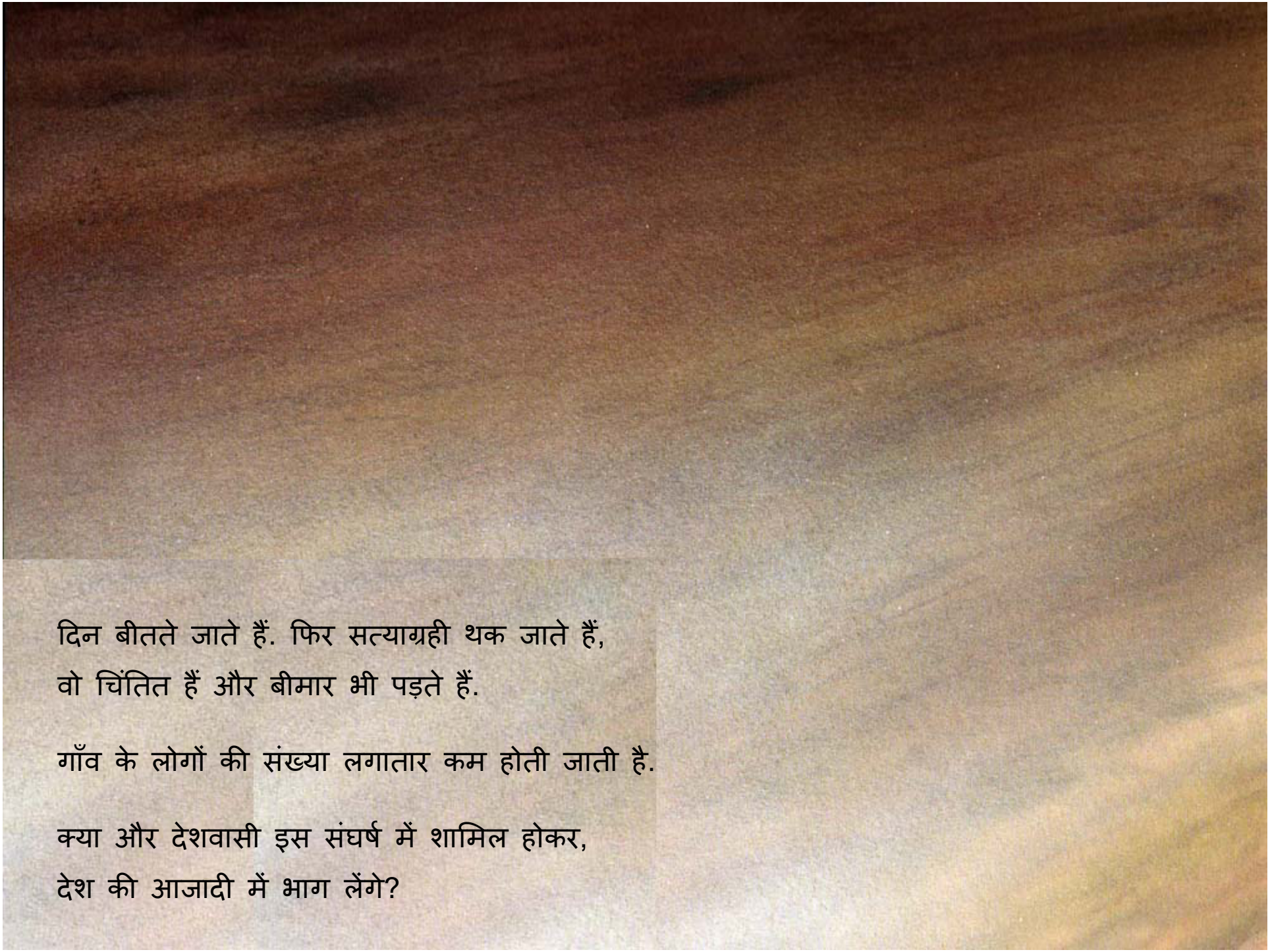

दिन बीतते जाते हैं. फिर सत्याग्रही थक जाते हैं,
वो चिंतित हैं और बीमार भी पड़ते हैं.

गाँव के लोगों की संख्या लगातार कम होती जाती है.

क्या और देशवासी इस संघर्ष में शामिल होकर,
देश की आजादी में भाग लेंगे?

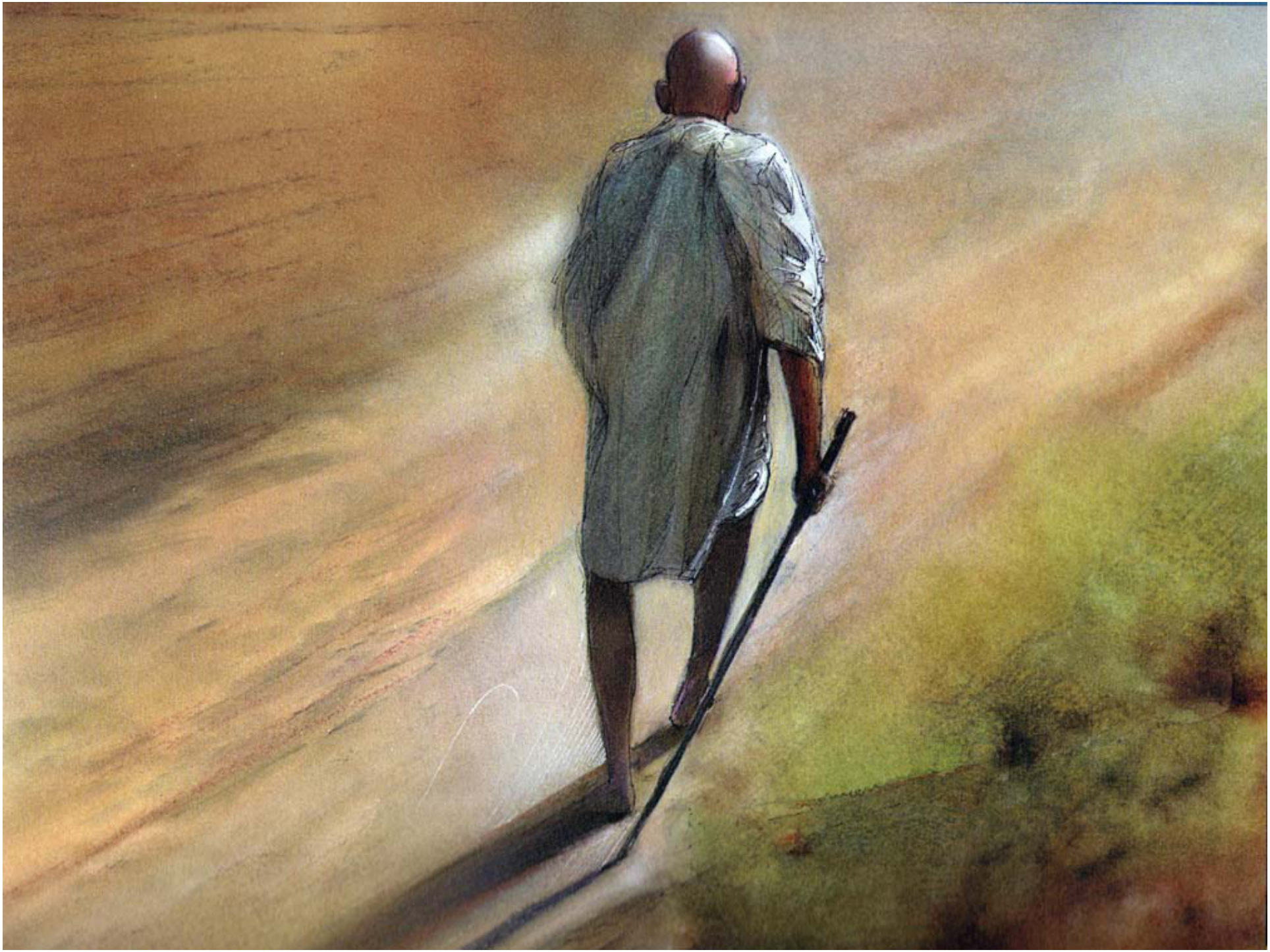

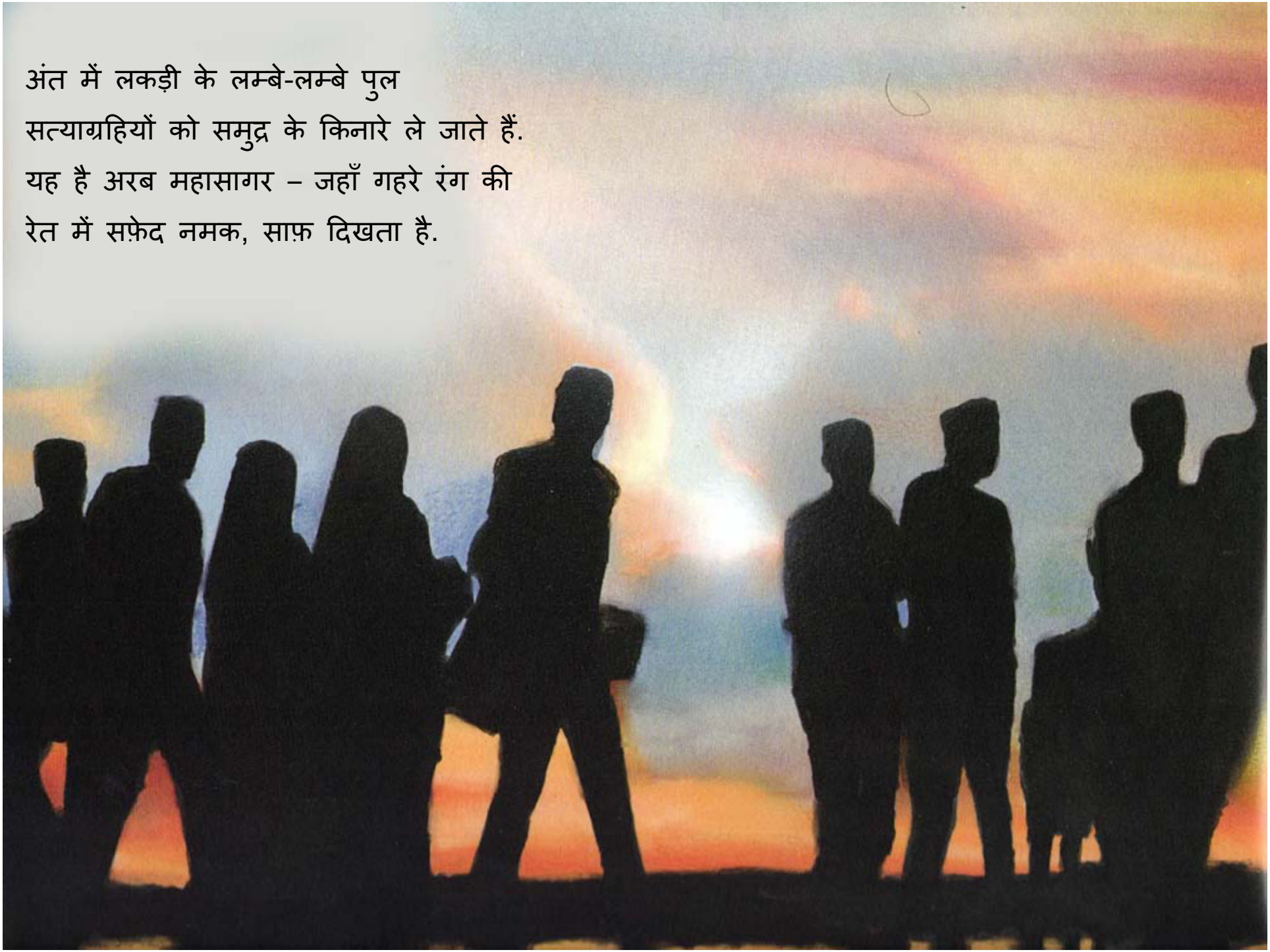
अंत में लकड़ी के लम्बे-लम्बे पुल
सत्याग्रहियों को समुद्र के किनारे ले जाते हैं.
यह है अरब महासागर – जहाँ गहरे रंग की
रेत में सफ़ेद नमक, साफ़ दिखता है.

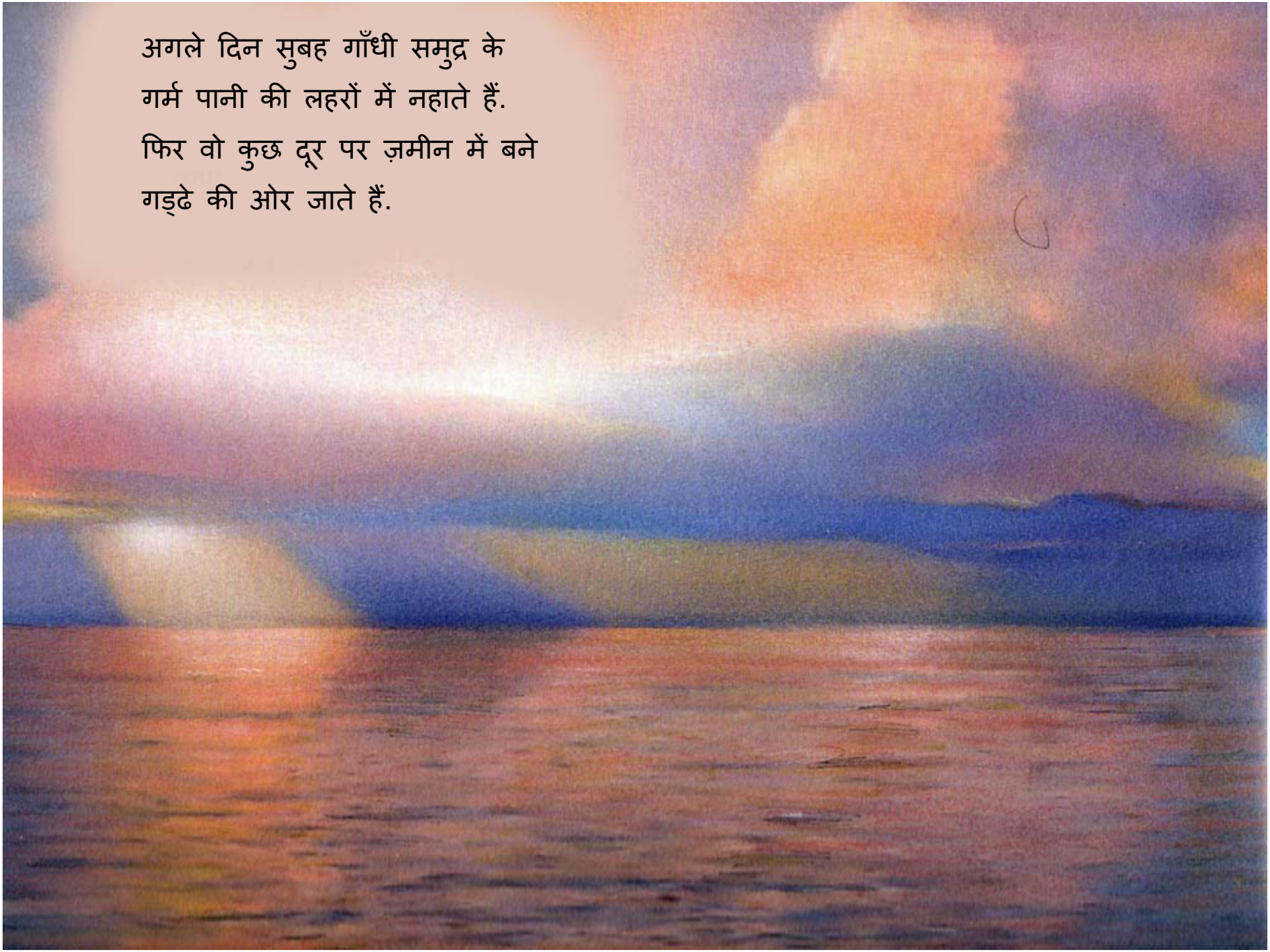
अगले दिन सुबह गाँधी समुद्र के
गर्म पानी की लहरों में नहाते हैं.
फिर वो कुछ दूर पर ज़मीन में बने
गड्ढे की ओर जाते हैं.

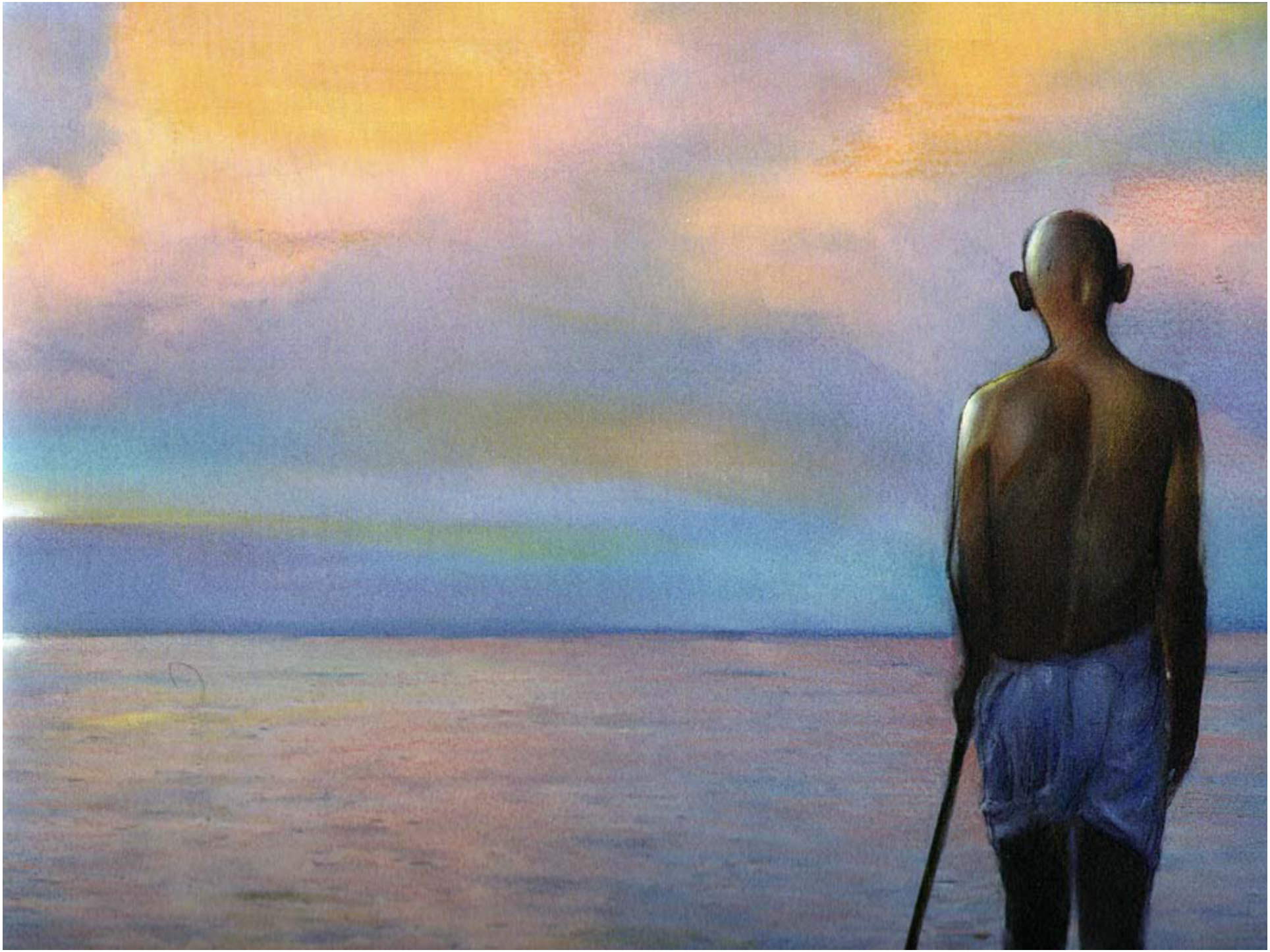

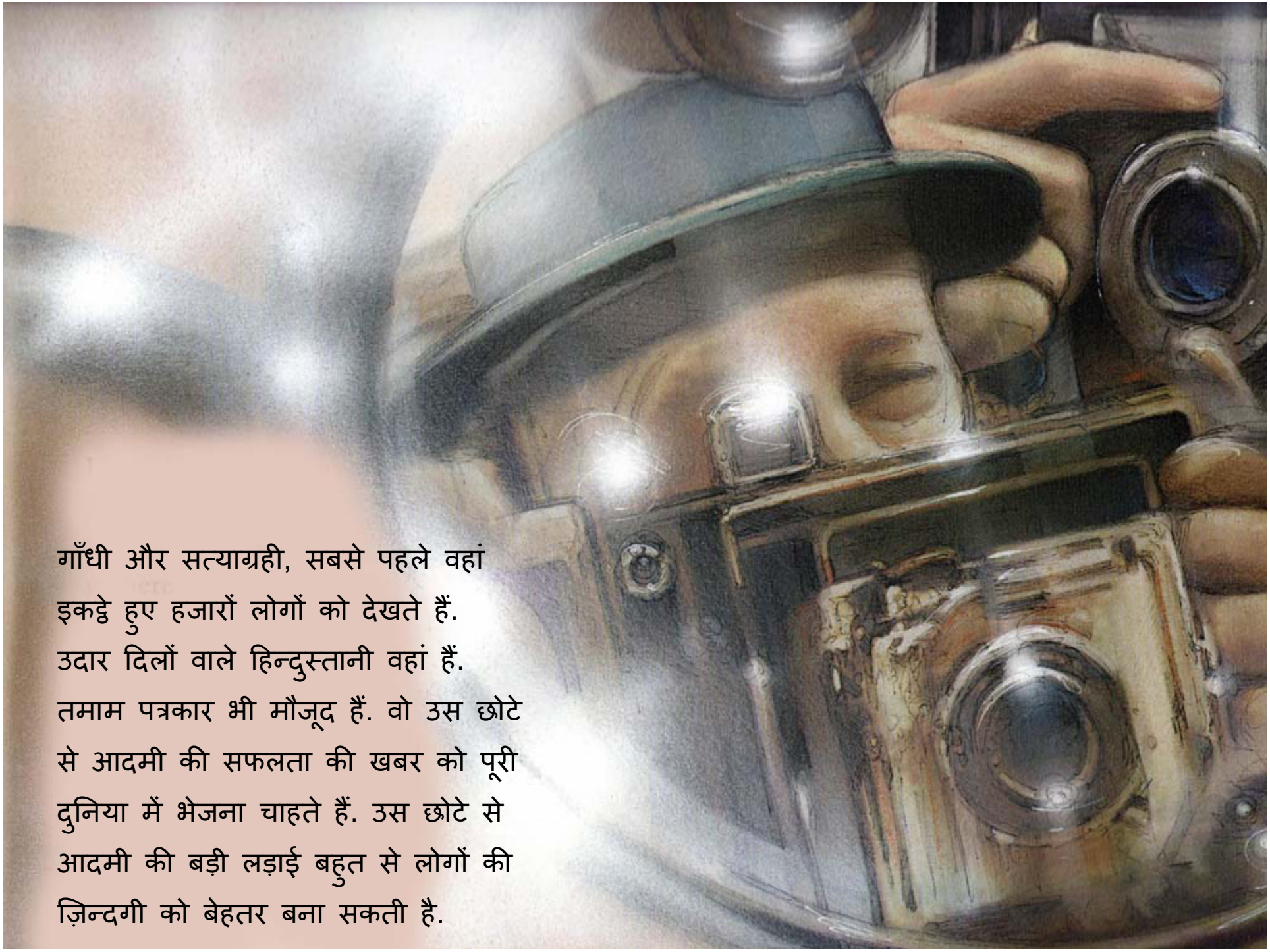

गाँधी और सत्याग्रही, सबसे पहले वहां इकट्ठे हुए हजारों लोगों को देखते हैं. उदार दिलों वाले हिन्दुस्तानी वहां हैं. तमाम पत्रकार भी मौजूद हैं. वो उस छोटे से आदमी की सफलता की खबर को पूरी दुनिया में भेजना चाहते हैं. उस छोटे से आदमी की बड़ी लड़ाई बहुत से लोगों की ज़िन्दगी को बेहतर बना सकती है.

अपनी पतली उँगलियों से गाँधी
मटीली, नमकीन मिट्टी को उठाते हैं.
वो इस छोटी सी ढेरी को इकट्ठा हुए
सभी लोगों को दिखाते हैं. नमक !

उसके बाद पूरे भारत देश में एक बड़ा दरवाज़ा खुलता है. सैकड़ों-हजारों – हिन्दू, मुस्लिम और दलित – गांवों और शहरों में समुद्र के पानी से नमक बनाते हैं. वे समुद्र के खारे पानी को उबालकर उससे नमक निकालते हैं. वे उस नमक को साफ़ करते हैं, बेंचते हैं और अपने भोजन पर छिड़कते हैं.

लोगों को गिरफ्तार करके जेल भेजा जाता है. अंत में जब जेल लबालब भर जाते हैं तब ब्रिटिश, लोगों को गिरफ्तार करना बंद करते हैं.

किसी ने इतना मीठा नमक पहले कभी नहीं चखा था.

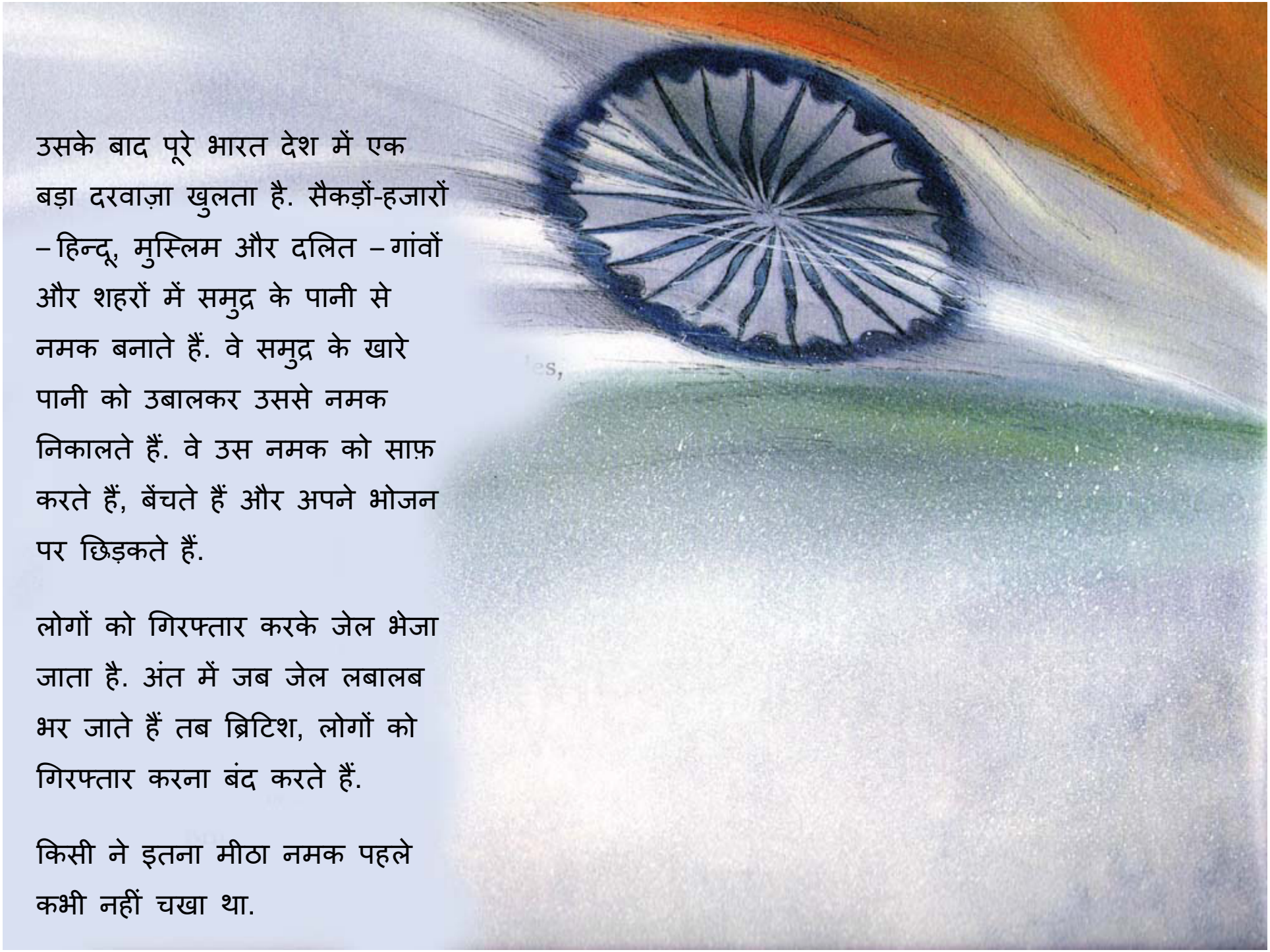

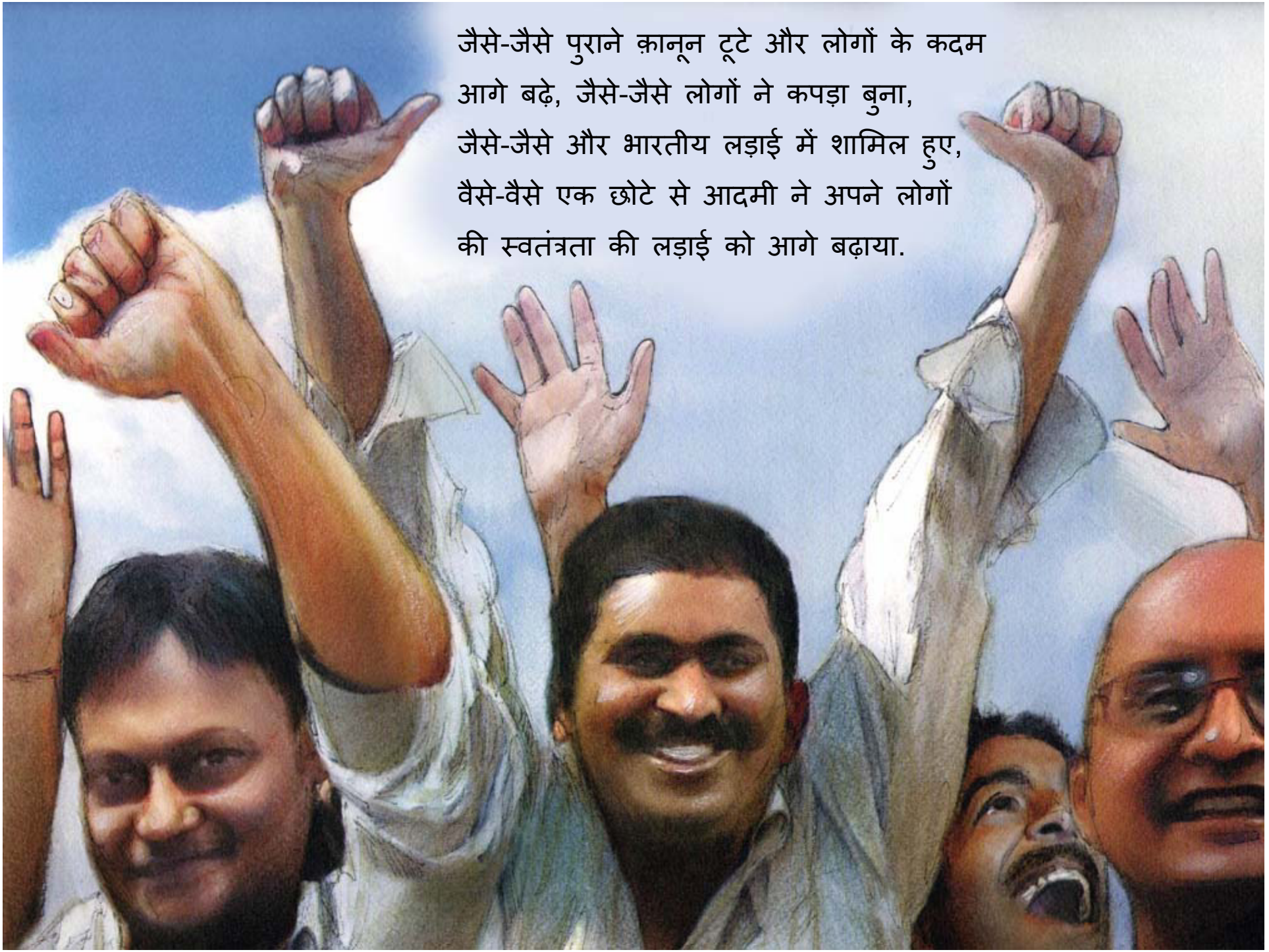
जैसे-जैसे पुराने क़ानून टूटे और लोगों के कदम
आगे बढ़े, जैसे-जैसे लोगों ने कपड़ा बुना,
जैसे-जैसे और भारतीय लड़ाई में शामिल हुए,
वैसे-वैसे एक छोटे से आदमी ने अपने लोगों
की स्वतंत्रता की लड़ाई को आगे बढ़ाया.

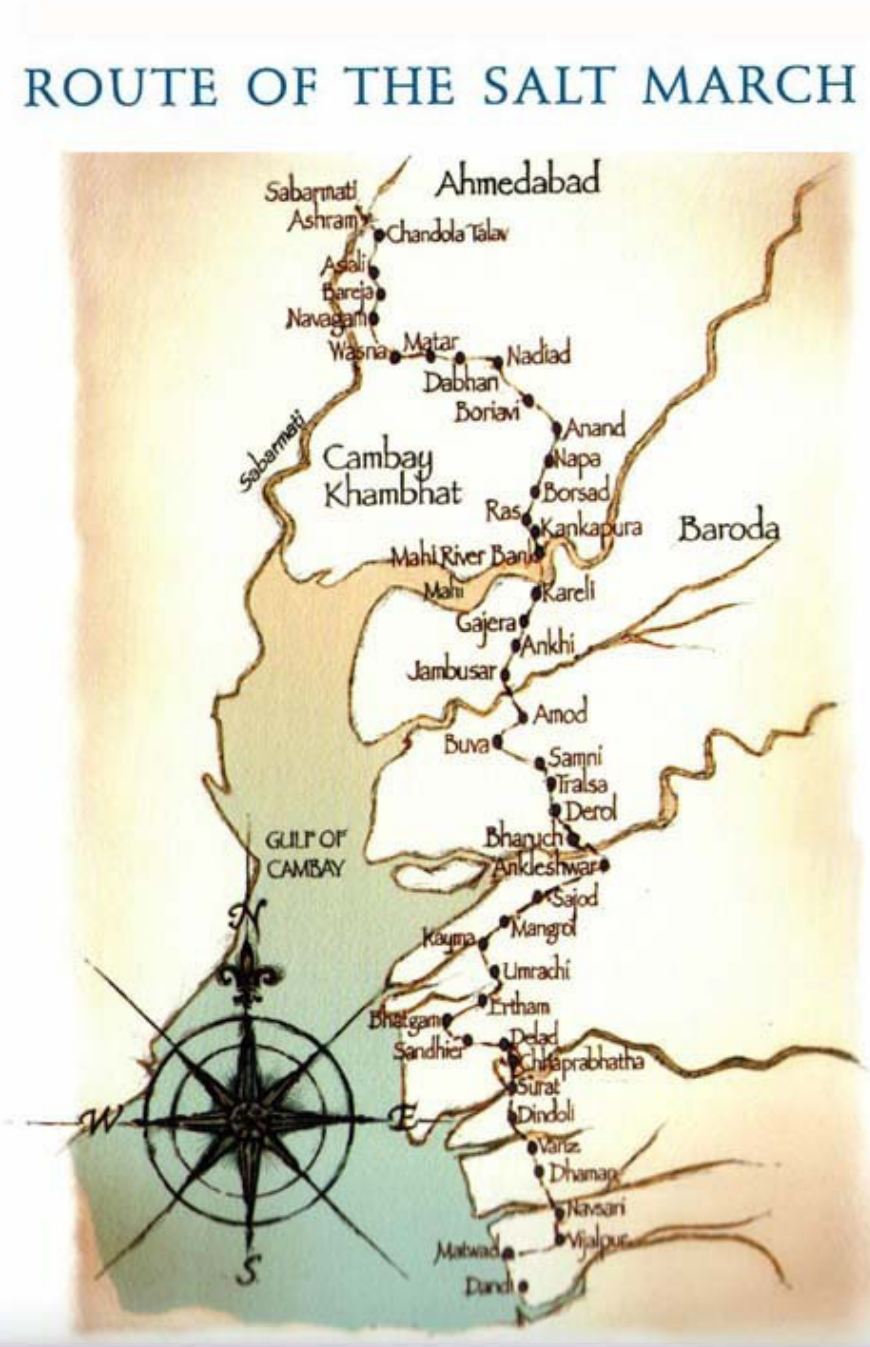

नमक यात्रा का मार्ग

जिस दिन गाँधी अपने साथियों के साथ समुद्र के किनारे पहुंचे उस दिन गाँधी ने कहा, “मैं पूरी नम्रता से यह सच्चाई बयां करना चाहता हूँ : कि अगर अहिंसा से हम अपने उद्देश्य की पूर्ती में सफल हुए तो उससे पूरी दुनिया को एक अनूठा सन्देश फैलेगा.” अगले दिन, 6 अप्रैल, 1930 को गाँधी ने समुद्र तट से नमकीन रेत उठाकर ब्रिटिश कानून को तोड़ा.

इससे गाँधी ने दुनिया को एक नया सन्देश भेजा. चौबीस दिन की उनकी समुद्र तट की दांडी-यात्रा को अंतरराष्ट्रीय कवरेज मिला. दांडी-यात्रा की ओर हजारों-लाखों भारतवासियों का ध्यान भी आकर्षित हुआ और फिर वे भी सत्याग्रह में शामिल हुए. लोगों ने ज़ालिम नमक कानून को तोड़ा, उन्होंने खुद अपना कपड़ा बुना, और फिर मिलकर शक्तिशाली भारतीय सरकार की स्थापना की.

अगले सत्तरह सालों तक गाँधी और उनके अनुयायी शांतिपूर्ण तरीके से अंग्रेजों से भारत को आज़ादी दिलाने के लिए संघर्ष करते रहे. गाँधी ने कट्टर दुश्मनों - हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच, शांति स्थापित की. उन्होंने दलितों के अधिकारों को मनवाने के लिया अनशन तक किया.

1947 में गाँधी का सपना साकार हुआ. 200 वर्षों की ब्रिटिश गुलामी से भारत मुक्त हुआ. गाँधी और उनके अहिंसक आन्दोलन से सारी दुनिया के नेताओं को प्रेरणा मिली.

“यह रोचक कहानी अमरीकी बच्चों का एक निराले इंसान से परिचय कराएगी. उस आदमी ने न केवल हिंदुस्तान को आज़ादी दिलाई पर अमरीका समेत पूरी दुनिया पर अपना प्रभाव डाला.” – राजमोहन गाँधी, यूनिवर्सिटी ऑफ़ इलेनॉइस में प्रोफेसर,
और महात्मा गाँधी के पोते.